

अध्याय 1= वह अकेला विजेता था

- अध्याय 2 = लालच एक अभिशाप है
- चैप्टर 3 = अपनी लिमिट से ज़्यादा बेट न लगाएं
- चैप्टर 4 = इस फिक्सिंग मैच के बाद उसने बेटिंग छोड़ दी
- अध्याय 5 = ज्योतिष एक दिव्य विज्ञान
- चैप्टर 6 = पंटर आध्यात्मिक हो जाता है
- चैप्टर 7 = बेटिंग में 6 मेंटल ट्रैप को कंट्रोल करना
- चैप्टर 8 = बेटिंग मार्केट और पंटर्स की किस्मत
- चैप्टर 9 = क्रिकेट ज्योतिष रिसर्च सिग्नल
- चैप्टर 10 = गुरु की पंटर्स को सलाह
- अध्याय 11 = राहु द फिक्सर
- अध्याय 12 = "शनि, कर्मों का फल देने वाले।"
- चैप्टर 13 = कुछ भी इत्तेफ़ाक नहीं है
- अध्याय 14 = गुप्ता का महत्व

लेखक = अमित शर्मा (एस्ट्रो क्रिकेट)

!!!!परिचय!!!!

मेरा जन्म एक पढ़े-लिखे परिवार में हुआ था। मेरे पिता एक वकील थे और मेरे दादा एक जाने-माने ज्योतिषी थे। अपनी टीनएज में, मैं कभी-कभी उनके चैंबर में जाता था, तो मैं देखता था कि बहुत

बड़ी भीड़ जमा हो गई है। तो, भीड़ को देखकर मुझे एक आइडिया आया और पता चला कि वह कोई आम छोटे-मोटे ज्योतिषी नहीं थे; लोग उनसे मिलने के लिए टाइम अपॉइंटमेंट लेते थे, और वहाँ हमेशा भीड़ जमा रहती थी।

और मुझे आज भी एक ऐसा क्लाइंट याद है जो हर कुछ दिन में आता था। वह हर कुछ दिन में आता था, और उसका बस एक ही कहना होता था: "पंडित जी, मेरी कुंडली देख लीजिए।" दादाजी पहले भी कई बार उनकी कुंडली देख चुके थे, फिर भी वह पूछते थे, और उनका जवाब भी हमेशा एक ही होता था: "भाई, तुम्हारी कुंडली देख ली गई है। पहले तुम अपनी नौकरी छोड़ दो। जिस दिन तुम नौकरी छोड़ो, उस दिन मेरे पास आना।"

फिर, एक महीने या 25 दिन बाद वह फिर आता, "पंडित जी, मेरी कुंडली देख लीजिए।" उसका वही दोहराया हुआ, बोला हुआ जवाब होता: "भाई, जिस दिन तुम नौकरी छोड़ोगे, उस दिन आ जाना।" एक दिन ऐसा हुआ कि उस आदमी ने अपनी नौकरी छोड़ दी और कहा, "लो, आज मैंने नौकरी छोड़ दी, अब बताओ।" दादाजी ने कहा, "बस कुछ दिन इंतज़ार करो।" 15 दिन, 20 दिन—मुझे सही समय नहीं पता—लेकिन हो सकता है कि कुछ दिनों बाद, उसे UK की किसी विदेशी कंपनी से एक्सपोर्ट के लिए ऐसा ऑफ़र मिला हो। वह आदमी लकड़ी की ब्रोकरेज करता था, और उसे एक एक्सपोर्ट ऑर्डर मिला, ऐसा ऑफ़र, कि समझो उसकी ज़िंदगी में एक सुनहरा समय शुरू हो गया, उसकी ज़िंदगी ने U-टर्न ले लिया।

और उस दिन के बाद, वह दादाजी पर इतना विश्वास करने लगा कि जब तक दादाजी गुज़र नहीं गए, तब तक वह आदमी उन्हें हर साल ₹21,000 भेजता था, जो उस समय के हिसाब से बहुत ज़्यादा था। घर के खर्च के लिए उसने वह ₹21,000 तय कर लिए थे।

मुझे बचपन में ही इसका एहसास हो गया था, इसलिए मेरा ज्योतिष में विश्वास हो गया। बहुत से लोगों को ज्योतिष पर विश्वास करना पड़ता है, या उन्हें ऐसा करने के लिए मजबूर किया जाता है, लेकिन मेरे लिए यह स्वाभाविक था। मेरी आँखों के सामने, कई भविष्यवाणियाँ सच निकलीं; कुछ गलत भी हो सकती थीं।

मेरे सामने... मेरे सामने, उन्होंने कहा था कि... मेरी एक बड़ी बहन थी, और दादाजी ने भविष्यवाणी की थी कि उस साल उसके लिए बुरा समय आएगा, कुछ भी हो सकता है। और बाद में पता चला कि उसी साल, जब... जब से उन्होंने भविष्यवाणी की थी... उसके बाद, बहन चल बसी।

तो यह मेरे लिए आम बात थी, तो यह मेरे जीन्स में था। तो जब मैंने... इत्तेफ़ाक से, जब मेरा काम नहीं चला... इत्तेफ़ाक से, मैंने एक बिज़नेस शुरू किया और वह बिज़नेस नहीं चला, तो मेरे सामने एक ऑप्शन था कि मैं एस्ट्रोलॉजर क्यों न बन जाऊं। कम पैसे में, कम समय में, एक एस्ट्रोलॉजर के तौर पर, मुझे ज़्यादा मेहनत नहीं करनी पड़ी, और यही ग्रहों की मर्जी थी, मैं एक एस्ट्रोलॉजर बन गया।”

मैं क्रिकेट ज्योतिष पर किताब क्यों लिख रहा हूँ?

मैं कई सालों से एक किताब लिखना चाहता था। किताब का मुख्य मकसद क्रिकेट एस्ट्रोलॉजी पर अपनी रिसर्च को सामने लाना था। क्योंकि मैं एक छोटा YouTube चैनल चलाता हूँ, इसलिए फॉलोअर्स अक्सर मुझे मैसेज करते थे कि वे क्रिकेट एस्ट्रोलॉजी सीखना चाहते हैं। हालाँकि, 30 मिनट के वीडियो के ज़रिए इसे सिखाना मुमकिन नहीं था।

इसके अलावा, अगर मैं सिर्फ क्रिकेट एस्ट्रोलॉजी सिखाता, तो यह उन लोगों के साथ नाइंसाफ़ी होती जो 'FIXERS' के बारे में नहीं जानते। जो छिपा है उसे सामने लाने के लिए, सिर्फ एस्ट्रोलॉजी काफ़ी नहीं है; सिस्टम के अंदर के किसी व्यक्ति के अनुभव की भी ज़रूरत होती है। मैं पढ़ने वालों को सिक्के के दोनों पहलू दिखाना चाहता था ताकि वे बाद में जो कुछ भी पता चले, उसके बारे में अपना फ़ैसला कर सकें।

जैसे ही मेरे मन में किसी इनसाइडर का ख्याल आया, मेरे दिमाग में सबसे पहला नाम 'गुरु' का आया। इस लाइन में वह अकेले ऐसे इंसान थे जिन पर मैं 100% भरोसा कर सकता था। वह न सिर्फ मुझे अपना समय देने के लिए तैयार रहते थे, बल्कि जो भी जानकारी देते थे, वह भी बिल्कुल सच होती थी।

लेकिन एक और प्रॉब्लम थी। मेरे पास उसका नंबर नहीं था, और उससे भी ज़रूरी बात, वह इंडिया छोड़ चुका था। हाँ, उसने दुबई और लंदन दोनों जगह अपने लिए घर बना लिए थे। और सबसे मज़ेदार बात यह थी कि मैं उससे 2009 के बाद से नहीं मिला था।

लेकिन, हमारा रिश्ता ऐसा नहीं था कि रेगुलर मिलना ज़रूरी हो। कुछ सालों तक हम होली और दिवाली पर एक-दूसरे को विश करते थे, लेकिन पिछले कुछ सालों में वह कॉन्टैक्ट भी कम हो गया था। मैंने उसका नंबर लेने के लिए हर मुमकिन कॉन्टैक्ट से बात की थी। मुझे एक बात पक्की पता थी: जैसे ही उसे पता चलेगा कि अमित को उसकी ज़रूरत है, वह तुरंत मुझे कॉल करेगा। भले ही वह अब एक बड़ा आदमी बन गया था—कुछ लोग उसे 500 करोड़ की पार्टी कहते थे, तो कुछ 1000 करोड़—मुझे इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता था। मुझे यह भी पता था कि पैसा उसके EGO को कभी नहीं भर सकता क्योंकि वह 'गुरु' था। मज़ेदार बात यह है कि मैंने ही उसे यह नाम दिया था, और मैं ही

अकेला था जो उसे इस नाम से बुलाता था। भले ही वह मुझसे 5 साल से ज़्यादा बड़ा है, लेकिन न तो उसे और न ही मुझे कभी उम्र का यह फ़र्क महसूस हुआ।

बहुत कोशिश के बाद, मेरा नंबर आखिरकार उन तक पहुँच ही गया। मैं बहुत ज़्यादा एक्साइटेड था, यह जानकर कि वह अब ज़रूर मुझसे कॉन्टैक्ट करेंगे। मुझे लगा कि आज रात मैं सो भी नहीं पाऊँगा। मैं पुरानी यादों में खो गया, मुझे याद आया कि मैं उनसे पहली बार कब मिला था।

मुझे आज भी उनका लुक याद है—गोरा रंग, भूरे बाल, लाल शर्ट, घुंघराले बाल, भूरी आँखें, और चेहरे पर हमेशा मुस्कान। एक शांत मुस्कान। आप इसे एक रहस्यमयी मुस्कान भी कह सकते हैं।

1991 का मैच...

अध्याय 1

‘वह’ अकेले विजेता था!

पेज 1...

मैं आज तक उस शाम को नहीं भूला हूँ। साउथ अफ्रीका इंटरनेशनल क्रिकेट में वापसी कर रहा था, और भारत से बेहतर शुरुआत और कौन कर सकता था? भारत पहले दो मैच एकतरफ़ा जीत चुका था। तीसरा इंटरनेशनल मैच दिल्ली में डे-नाइट मैच था। भारत ने पहले बैटिंग की और 287/4 का अच्छा टोटल बनाया। रवि शास्त्री और संजय मांजरेकर दोनों ने सेंचुरी बनाई।

भारतीय फ़ैन्स ने मान लिया कि भारत मैच जीत चुका है; अब बस यही देखना बाकी था कि क्या इस गेम में कोई मुकाबला होगा या भारत यह भी एकतरफ़ा जीत जाएगा।

मैंने पहली इनिंग्स घर पर देखी, लेकिन फिर मैंने बाकी मैच देखने के लिए अपने दोस्त के घर जाने का मन बनाया। उस समय, मेरे घर पर कलर टीवी नहीं था, और क्योंकि यह डे-नाइट मैच था, इसलिए इसे कलर में देखना एक अलग ही लेवल का मज़ा होने वाला था। मैं अपने दोस्त के घर भाग रहा था, उस दिन मुझे बिल्कुल भी अंदाज़ा नहीं था कि मैं एक ऐसी दुनिया में कदम रखने वाला हूँ जो एक ि बन जाएगी।

यह मेरी ज़िंदगी का सबसे ज़रूरी पहलू है—एक ऐसी दुनिया जिसके बारे में मैं एक दिन किताब लिखूंगा।

मेरे दोस्त के पिता घर से ही एक बुकी के लिए ‘पेंसिलर’ (रिकॉर्ड रखने वाला) का काम करते थे। जब मैं वहाँ पहुँचा, तो टीवी के सामने करीब 8 से 10 लोग जमा थे। मेरे दोस्त के पिता ज़मीन पर बैठे थे; वे मुश्किल से ही मैच देख रहे थे, अपना समय कॉल अटेंड करने और चीज़ें लिखने में बिता रहे थे। वहाँ कई तारों से जुड़ा एक रेडियो भी था, जिससे कॉल पर रेट बताते हुए आवाज़ सुनी जा सकती थी।

मैंने जो सबसे पहला अनाउंसमेंट सुना, वह मुझे आज भी याद है: वह था "18-20 इंडिया।" बाद में मुझे समझ आया कि वे उस रेडियो को "डब्बा" और आने वाली ऑडियो फ्रीड को "लाइन" कहते थे। आवाज़ जो अनाउंस कर रही थी वह "भाव" (ऑड्स) था। दूसरे शब्दों में, इसका मतलब था कि बुकी के पास इंडिया का रेट 18 पैसे बैक (खाने) और 20 पैसे ले (लगाने) था।

साउथ अफ्रीका अच्छा खेल रहा था, और 100 के स्कोर तक पहुँचने तक उसने सिर्फ़ एक विकेट खोया था। वहाँ बैठे लगभग सभी लोगों ने इंडिया पर अपना पैसा लगाया था। असल में, यह कहना ज़्यादा सही होगा कि जैसे-जैसे रन बन रहे थे, वे लोग इंडिया पर और ज़्यादा पैसा लगा रहे थे, यह देखते हुए कि यह आसान पैसा है। सिवाय एक आदमी के।

मैं क्रिकेट का फ़ैन था और हर लाइव मैच देखता था, लेकिन आज मेरे लिए बिल्कुल अलग अनुभव था। मेरा फ़ोकस मैच पर कम और वहाँ मौजूद लोगों की एक्टिविटीज़ और चेहरे के हाव-भाव पढ़ने पर ज़्यादा था।

मैंने अपने दोस्त से सुना था कि लोग क्रिकेट पर पैसे लगाते हैं, लेकिन आज पहली बार मुझे इसे लाइव देखने का मौका मिला। मैंने देखा कि जब साउथ अफ्रीका का स्कोर 150 रन पर पहुँचा, तो मेरे दोस्त के पापा टेंशन में आ गए। उन्होंने एंट्रीज़ लिखना बंद कर दिया। शायद उन्हें एहसास हो गया था कि चीज़ें पूरी तरह से खराब होने वाली हैं (KABADA)।

मुझे यह भी लगा कि वह वहाँ बैठे लोगों के बारे में परेशान थे, जिन्होंने लालच में मान लिया था कि इंडिया पक्का जीतेगा और थोड़े से रिटर्न के लिए काफ़ी पैसे का रिस्क लिया था। तभी, उस गोरे लड़के ने अपनी सीरियस आवाज़ में कहा, "अंकल, क्या मैं उनकी बेट ले सकता हूँ?" अंकल ने उसे धीमी आवाज़ में इजाज़त दे दी। साउथ अफ्रीका जीतने का फ़ेवरेट बन गया था।

वहाँ अभी भी कुछ लोग बैठे थे जो इंडिया की जीत की उम्मीद लगाए हुए थे। उन्हें लगता था कि एक विकेट गिरते ही साउथ अफ्रीका ढेर हो जाएगा, इसलिए वे इंडिया पर पैसे लगाते रहे—लेकिन अब बुकी बदल गया था। अंकल की जगह उस "फेयर बॉय" ने कब्ज़ा कर लिया था। हर कोई उसके पास अपनी एंट्री कर रहा था। उस समय किसी को नहीं पता था कि यह "फेयर बॉय" एक दिन टॉप 10 बुकी में से एक बन जाएगा, और न ही मैंने कभी सोचा था कि वह मेरा "गुरु" बन जाएगा।

और आज, एक MIRACLE हुआ। अफ्रीका मैच जीत गया। वहाँ बैठे सबके चेहरों का रंग उड़ गया था, अंकल के भी। मैं, जो हर मैच में इंडिया की जीत का जश्न मनाता था, आज कन्फ्यूज़ था कि कैसे मनाऊँ। सबसे अजीब बात जो मैंने देखी वो ये थी कि 'फेयर बॉय' अच्छे खासे पैसे (प्लस) से आगे था, फिर भी उसका चेहरा एकदम कूल था। थोड़ी देर पहले उसके चेहरे पर मुस्कान थी, लेकिन अब वो बस कूल था। शायद उसे एहसास हो गया था कि अब से, 'ऐसे दिन' उसकी ज़िंदगी का रेगुलर हिस्सा बनने वाले हैं। उसे कूल रहना था। शायद आज मुझे अपना पहला 'गुरु मंत्र' मिला- 'हर सिचुएशन में कूल रहना'। चाहे दुख हो या खुशी, हमेशा शांत रहना।

अध्याय 2

'लालच एक अभिशाप है'।"

उन्होंने उन लड़कों को यह संदेश भी दिया था कि

इस नए 'एक्साइटमेंट' ने मुझे अट्रैक्ट किया था। क्रिकेट के खेल से ज़्यादा, मुझे अंदर पैसे कमाने वाले 'खेल' में दिलचस्पी हो गई थी। वर्ल्ड कप पास था। 'फेयर बॉय' से मिलने और उससे कुछ सीखने का अट्रैक्शन अपने पीक पर था। मेरे मन में ख्याल आ रहा था- 'क्यों न मैं भी अपनी किस्मत (भाग्य) आजमाऊँ?'

वर्ल्ड कप शुरू हो गया था। मैं बस उस दोस्त की बिल्डिंग में जाकर मैच देखता था। हाँ, बस 'Observe'। उससे पहले, मैं क्रिकेट एन्जॉय करता था। लेकिन उस रात मैच देखने के बाद, मैं बहुत जल्दी समझ गया कि मैच 'enjoy' करने से पैसे नहीं मिलते। उस शाम सब लोग एन्जॉय कर रहे थे, लेकिन सबको नुकसान हुआ। और 'फेयर बॉय' को सिर्फ प्रॉफिट हुआ क्योंकि वह 'observing' कर रहा था। तो, मैं बस observe करने और यह समझने की कोशिश कर रहा था कि रेट ऊपर-नीचे क्यों होता है। पहले ही मैच में एक पूरी डिजास्टर (KABADA) हो गई थी। न्यूज़ीलैंड ने 33 पैसे की फेवरेट ऑस्ट्रेलियाई टीम को हरा दिया। वर्ल्ड कप 22 फरवरी 1992 को शुरू हुआ था। उस दिन, मुझे नहीं पता था कि यह 2+2=4 नंबर मेरे करियर में एक IMPORTANT नंबर बनने वाला है।

इंडिया इंग्लैंड से भी हार गया। वर्ल्ड कप का मोमेंटम धीरे-धीरे बढ़ रहा था। अब वो मैच आ गया था जिस पर मैं अपनी ज़िंदगी में पहली बार बेट लगाने वाला था। वर्ल्ड कप के ज़्यादातर मैच सुबह 8:30 बजे शुरू होते थे क्योंकि वो ऑस्ट्रेलिया में हो रहे थे। 25 तारीख की शाम को ही सारे लड़के बिल्डिंग के नीचे जमा हो गए थे। 'फेयर बॉय' भी आ गया था। अब तक वो बुकी बन चुका था। उसकी नज़रें मुझसे मिलीं, और उसने मुझे पहचान लिया। उसने मुस्कुराते हुए धीरे से पूछा, "कुछ कमाया या नहीं?"

मैंने कहा, "मैं कल पहली बार शर्त लगाऊंगा।"

उन्होंने पूछा, "पहली बार?" वह हैरान रह गए। "तो फिर कल आप जीत पक्की कर देंगे, ऑल द बेस्ट," उन्होंने कहा, मुस्कुराए और आगे बढ़ गए।

इससे पहले कि मैं कुछ समझ पाता, वह वहाँ से चला गया। वह अब ग्रुप में रहने लगा था। उसने गुडविल बना ली थी क्योंकि वह अपने पेंटर्स को सबसे तेज़ पेमेंट देता था। लेकिन उसकी बातों से मुझे मोटिवेशन मिला। मैंने अंकल से शर्त लगाई थी कि ऑस्ट्रेलियाई नहीं जीतेंगे। ऑड्स बहुत अच्छे थे। मैंने 25 पैसे पर 5000 लगाए; अगर ऑस्ट्रेलियाई जीते, तो मुझे 1250/ देने होंगे। उस समय, मैंने यह भी नहीं सोचा था कि अगर ऑस्ट्रेलियाई जीते तो मैं वह 1250/ कैसे चुकाऊंगा। सच कहूँ तो, मैंने यह भगवान पर छोड़ दिया था—देखते हैं क्या होता है।

मैच शुरू हुआ। हम सब एक ग्रुप में साथ में मैच देख रहे थे। उस दिन 'फेयर बॉय' भी वहीं था। और चमत्कार होने लगा। ऑस्ट्रेलियाई टीम को अच्छी शुरुआत मिली, लेकिन वे पेस-फ्रेंडली विकेट पर नहीं खेल पाए और ऑस्ट्रेलियाई टीम 175 रन पर ढेर हो गई। पहली इनिंग के बाद, मेरी बुक बन गई—दोनों तरफ 4000 से ज़्यादा। वह पैसा मेरे पूरे साल की पॉकेट मनी से भी ज़्यादा था। लेकिन मैंने सेलिब्रेट न करने का फैसला किया, शायद फेयर बॉय के असर की वजह से।

उस दिन मैच की दूसरी इनिंग्स में, मैंने एक बात देखी—उस फेयर बॉय ने अभी तक अपनी बेट नहीं काटी थी। अफ्रीका फेवरेट बन गया था, और वह अब भी लगातार अफ्रीका को सपोर्ट कर रहा था। और मुझे लगा—क्या वह आज अफ्रीका पर एकतरफ़ा खेलकर कोई गलती कर रहा है? लेकिन किसी की परवाह किए बिना, वह एकतरफ़ा अफ्रीका को सपोर्ट करता रहा। मुझे आज भी याद है, अफ्रीका के 40 पैसे पर आने के बाद भी, उसने अफ्रीका को सपोर्ट किया।

या 50,000/-। वह खेल रहा था, लेकिन मेरे दिल की धड़कनें बढ़ रही थीं।

लेकिन लगभग 20 पैसे पर, उसने अपना सारा रिस्क कम कर दिया और दोनों तरफ से प्रॉफ़िट बुक किया। भले ही वह एक बुकी बन गया था, फिर भी वह अपनी बेट्स पर भी अच्छी-खासी रकम रिस्क लेता था।

आज फिर उन्होंने सबक सिखाया-‘जब खेल एकतरफा अपने पक्ष में चल रहा हो तो कान क्यों काटना?’

‘क्या?’

अध्याय 3

‘अपनी लिमिट से ज़्यादा बेट न लगाएं’

पृष्ठ 1

इंग्लैंड और अफ्रीका के बीच वर्ल्ड कप का मैच आया, और इस मैच ने मुझे कुछ ऐसा सिखाया जो मैं आज तक नहीं भूला हूँ। और इसी मैच में मुझे मेरा गुरु मिला। हाँ, मेरी प्रोफेशनल लाइफ का पहला गुरु, और वो वही ‘फेयर बॉय’ था। मैंने पहले ही मान लिया था कि उसमें कुछ खास है, कि वो दूसरों से कुछ ज़्यादा जानता है। लेकिन आज, मैंने उसे दिल से अपना गुरु मान लिया।

मेलबर्न ग्राउंड पर, इंग्लैंड ने टॉस जीता और फील्डिंग करने का फैसला किया। अच्छी ओपनिंग पार्टनरशिप हुई, और हडसन का पहला विकेट 151 के स्कोर पर गिरा। सिर्फ़ एक क्रिकेट पंटर ही समझ सकता है कि जब किसी टीम का स्कोर बिना किसी नुकसान के 151 हो तो उसके लिए ‘BHAV’ (ऑइस) क्या होगा। उन दिनों, ‘सेशन’ (सेशन बेटिंग) नहीं होते थे, लेकिन अगर होते, तो मार्केट पक्का 280 का स्कोर बताता। मुझे ठीक से याद नहीं है कि BHAV क्या निकला, लेकिन किसी को नहीं पता था कि यह एक जैकपॉट मैच बनने वाला है। गोरा लड़का लाखों कमाने वाला था।

अफ्रीका सिर्फ़ 236 रन बना सका, जो उनकी ओपनिंग पार्टनरशिप को देखते हुए कम था, लेकिन अफ्रीका के बॉलिंग अटैक को देखते हुए, यह कोई छोटा टोटल भी नहीं था। फेयर बॉय अब पूरी तरह से बुकी बन गया था। वह सबसे एंट्री ले रहा था। मुझे एक पंटर याद है जिसने अपना पैसा एकतरफ़ा इंग्लैंड पर लगाया था; पहली इनिंग्स के उतार-चढ़ाव के बाद भी, उसकी टीम इंग्लैंड ही रही। फेयर बॉय बिल्कुल बेफ़िक्र और बिंदास होकर सबकी एंट्री ले रहा था। शायद उसे पता चल गया था कि एक ड्रामा होने वाला है। मैच की सिचुएशन कैसी भी हो, वह हमेशा कूल रहता था।

उसने कभी टेंशन को खुद पर हावी नहीं होने दिया।

मेरी पहली सीख: “मैच के समय हमेशा कूल रहना।”

वर्ल्ड कप धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा था, मैं छोटे मैचों में प्लस (प्रॉफिट कमा रहा था) में था, लॉस (कोई लॉस नहीं हो रहा) का काम नहीं था।

लेकिन अब जो मैच आने वाला था, वह भारत और पाकिस्तान का था।

एक अच्छे मैच की तलाश में, मुझे लगा कि यह एक अच्छा मैच होगा, इसलिए मेरा कैपिटल, जो लगभग 7,000 से 8,000 हो गया था, मुझे लगा कि यहाँ से, यह अच्छे से डबल हो सकता है।

तो उस मैच में...

पूरी दुनिया इंडिया पर थी, मेरा मन भी कह रहा था इंडिया पर, मैच भी इंडिया पर हो रहे थे।

इंडिया ने सिर्फ़ 216 रन बनाए थे। आज के हिसाब से यह बहुत कम लगता है, लेकिन सिडनी का मैदान, वो मैदान जो शायद मेलबर्न में था... या सिडनी में था, मुझे वो मैदान ठीक से याद नहीं है। जो भी हो, वो शायद सिडनी में था, तो उस मैदान के हिसाब से रन ठीक-ठाक थे।

सब कुछ ठीक चल रहा था।

आज मैं सोचता हूँ, जब तारीख 4 मार्च है तो सब कुछ सही कैसे हो सकता है? वो मैं आज सोचता हूँ। आज मुझे पता है कि इसका राज़ क्या है। लेकिन उस दिन, मेरे हिसाब से, सब कुछ सही था, वहाँ से एकतरफ़ा पैसा लेने का माइंडसेट बन गया था।

जब पाकिस्तान की पारी शुरू हुई...

तो, दो विकेट जल्दी गिर गए, पाकिस्तान ने उन्हें खो दिया, लेकिन उसके बाद, बैट्समैन सेट हो गए। जावेद मियांदाद और रमीज़ राजा... दोनों सेट हो गए, और लगभग, स्कोर 100 रन के पार पहुँच गया।

स्कोर 100 रन के आस-पास पहुँच गया था। 216 में से अगर यह 100 रन के आस-पास पहुँचता है, तो आप समझ सकते हैं कि घबराहट (एंगजायटी) बढ़ गई थी। और उस घबराहट का, उसका नतीजा यह हुआ... जो भी था, बुरा समय था या जो भी था, आज भी मुझे नहीं पता कि क्या हुआ। मुझे लगा कि नहीं, यहाँ से अपना कैपिटल बचाओ, यहाँ से लगता है कि आज इंडिया नहीं जीतेगा। और मैंने कट-कट-कट-कट-कट किया और अपने सारे ट्रेड्स से एग्जिट कर दिया। और मैंने अपनी बुक दोनों तरफ से माइनस कर दी।

और जैसे ही मैंने दोनों तरफ माइनस किया, ठीक उसी समय पाकिस्तान के विकेट गिरने लगे।

आज भी मुझे वो सीन याद है, आप सबने भी देखा होगा, कैसे... जावेद मियांदाद क्रीज पर बंदर की तरह कूद रहे थे, किरण मोरे, और दोनों में टक्कर हो गई। इसके वीडियो यूट्यूब पर भी मौजूद हैं।

तो कहने का मतलब है, उस मैच में मुझे लगभग 5,000 या 6,000 का नुकसान हुआ। दोनों तरफ से काटकर आप मतलब समझ सकते हैं।

तो, दोनों तरफ... दोनों तरफ से काटने के बाद... जबकि उससे पहले, मैंने... मैंने गौरव लड़ा से पूछा था कि तुम क्या समझते हो? कभी-कभी हम बात करते थे, तो उसका आइडिया, एक्सपीरियंस... तो उसने कहा था, "जो भी नीचे आए, वही खा लो।" एक लाइन का मैसेज छोड़कर वह आगे बढ़ गया। तो उसकी... उस दिन की वो बात भी सच हो गई, जो भी नीचे आता है मतलब, अगर लगता है कि अब इंडिया हारने वाला है, पाकिस्तान की पार्टनरशिप सेट हो गई है, तो अब, उल्टा, ज़्यादा खाना (बैक करना) चाहिए था।

लेकिन...

ऐसा ही होता है, मेरा ज्योतिष बाद में बना, इसलिए आज पता है कि ज्योतिष... लेकिन इसने जो संदेश दिया, इस मैच में भी, इसने जो संदेश दिया, वह यह था...

कि आज, मैंने ट्रेड क्यों काटा? क्योंकि मैं डर गया था। और मैं क्यों डरा? क्योंकि सिर्फ़ एक मैच में, मुझे लगा कि मैं अपना कैपिटल डबल कर लूंगा।

तो इससे पता चलता है, यह मैसेज मिलता है... कि हमेशा अपनी लिमिट में ही बेट लगाओ। अगर तुम अपनी कैपेसिटी से ज़्यादा ट्रेड करोगे, तो कोई न कोई प्लेनेट सब कुछ खराब कर देगा। तुम्हें ट्रेड काटना होगा, या तुम्हें एग्जिट करना होगा।

अध्याय 4

इस फिक्सिंग मैच के बाद उन्होंने बेटिंग छोड़ दी

पृष्ठ 01

1992 में पाकिस्तान और इंडिया के बीच हुए वर्ल्ड कप मैच के बाद मैंने बेटिंग से दूरी बना ली थी। मुझे एहसास हो गया था कि यह काम उतना आसान नहीं है जितना बाहर से दिखता है। मुझे लगा कि इससे EXIT करना ही सही है। मैंने अपनी पढ़ाई पर फोकस करना ज़्यादा बेहतर समझा। अपने 'गुरु' से मिलना भी बंद कर दिया। मैंने सुना था कि 1994 में एक मैच में उन्हें बहुत बड़ी हार मिली थी। और उस मैच के बाद उन्होंने बेटिंग छोड़ने का फैसला किया। बहुत बाद में उन्होंने मुझे बताया कि वह

कौन सा मैच था जिसने उन्हें हिलाकर रख दिया था, जिससे उन्हें FIXING का KNOWLEDGE मिला।

उस मैच में क्या हुआ, मैं आपको उन्हीं के शब्दों में बता रहा हूँ:

मैच के आखिरी सात ओवर में जीतने के लिए 62 रन चाहिए थे, और पांच विकेट बाकी थे। कोई भी क्रिकेट फैन सोचेगा कि यह मैच आखिर तक जाएगा, लेकिन उस दिन जो हुआ उसने पूरे देश को चौंका दिया। क्रिकेट इतिहास का एक ऐसा चेज़ जिसे दो खिलाड़ियों ने टेस्ट मैच के नेट प्रैक्टिस सेशन में बदल दिया।

यह विल्स वर्ल्ड सीरीज़ थी, जो अक्टूबर 1994 में इंडिया, न्यूज़ीलैंड और वेस्ट इंडीज़ के बीच खेली जा रही थी। वह समय था जब ट्राई-नेशन टूर्नामेंट रेगुलर होते थे। टूर्नामेंट की शुरुआत अच्छी हुई थी; टीम इंडिया ने अपने पहले दो मैच जीत लिए थे, और फिर वह दिन आया, 30 अक्टूबर 1994। पर्सनली, मुझे लगता है कि इस दिन को इंडियन क्रिकेट के लिए काला दिन घोषित कर देना चाहिए था। लेकिन बिना किसी पक्के सबूत के, हम सिर्फ़ दावे और अंदाज़े ही लगा सकते हैं।

इंडिया ने टॉस जीतकर पहले बॉलिंग करने का फैसला किया और विंडीज़ ने 50 ओवर में छह विकेट पर 257 रन बनाए। टीम इंडिया ने कुल छह बॉलर इस्तेमाल किए, जिनमें से पांच बॉलर का इकॉनमी रेट छह से कम था, और फिर मनोज प्रभाकर थे; उनका इकॉनमी रेट नौ रन प्रति ओवर था, जो उस ज़माने के हिसाब से बहुत ज़्यादा था। ठीक है, हर बॉलर का एक दिन खराब हो सकता है, है ना?

ओवर नंबर 49 में एक बहुत ही मज़ेदार घटना हुई। जवागल श्रीनाथ बॉलिंग कर रहे थे, और एंडरसन कर्मिस ने डीप बैकवर्ड पॉइंट की तरफ़ शॉट खेला। वहां फील्डर विनोद कांबली थे, जिन्होंने बॉल को ठीक से पकड़ा और विकेटकीपर एंड की तरफ़ एक तेज़ भ्रो फेंका। दो रन की बिल्कुल गुंजाइश नहीं थी। बैट्समैन ने फिर भी कोशिश की, और जेंटलमैन नयन मोंगिया क्या करते हैं? वे बॉल पकड़ते हैं और कर्मिस को रन आउट करने की कोशिश भी नहीं करते, जो उस समय फ्रेम में भी नहीं थे। इसके उलट, मोंगिया ने बस बॉलर एंड की तरफ़ बॉल फेंकने का मन बनाया, और फिर मोंगिया जी ऐसा भी नहीं करते; बॉल उनके हाथ में ही रहती है। और देखिए बैट्समैन एथर्टन कहां हैं; वे मुश्किल से आधी पिच पर हैं। सवाल उठता है: क्या यहां कुछ गड़बड़ थी, या यह मोंगिया का बस एक एपिक ब्रेन फ़ेड मोमेंट था? नयन मोंगिया को ट्रिब्यूट देने के लिए, 2009 में, कोवर्ट क्रिकेट वर्स में, ब्रेट ली ने विजय शेखावत को रन आउट नहीं किया था।

वैसे भी, 257 कोई बड़ा स्कोर नहीं था; ज़्यादा से ज़्यादा, यह कानपुर की धीमी पिच पर एक कॉम्पिटिटिव स्कोर था। और टीम इंडिया की बैटिंग लाइनअप में, इन-फॉर्म सचिन तेंदुलकर, सिद्धू, विनोद कांबली और मोहम्मद अज़हरुद्दीन थे, जिन्होंने सीरीज़ के पहले मैच में मैच जिताने

वाले 81 रन बनाए थे। चेज़ शुरू हुआ। प्लान शायद यह था कि मनोज प्रभाकर एंकर रोल निभाएंगे और दूसरे बैट्समैन उनके आस-पास पॉजिटिव होकर खेलेंगे। शुरुआत में, प्लान ठीक काम कर रहा था। सचिन तेंदुलकर ने अपने ट्रेडमार्क स्ट्रेट ड्राइव खेले और क्रीज़ पर सेट हो रहे थे, और फिर वह 34 रन पर कर्मिस की गेंद पर क्लीन बोल्ट हो गए। इसी तरह, विनोद कांबली और अज़हर भी अपनी शुरुआत को बड़ी पारी में नहीं बदल सके। जडेजा और सिद्धू सिंगल-डिजिट स्कोर पर आउट हो गए। लेकिन लगातार विकेट गंवाने के बावजूद, आस्किंग रेट कभी भी पहुंच से बाहर नहीं था। 43वें ओवर में, अजय जडेजा रन आउट हो गए, और नए बैट्समैन, विकेटकीपर नयन मोंगिया, क्रीज़ पर आए। इक्वेशन यह था कि सात ओवर में 62 रन चाहिए थे। यह लगभग नौ रन प्रति ओवर है और पांच विकेट बाकी हैं।

ठीक एक हफ्ते पहले, इसी विंडीज़ टीम के खिलाफ़, मोंगिया ने एक अहम भूमिका निभाई थी। उस मैच में, भारत 222 रनों का पीछा कर रहा था, और एक समय पर स्कोर छह विकेट पर 195 रन था। नयन मोंगिया ने समझदारी भरी पारी खेली, 31 गेंदों पर 24 रन बनाए, और उन्होंने पक्का किया कि भारत बिना किसी और दिक्कत के जीत हासिल कर ले। तो, इस मैच में क्या गलत हो सकता था? लेकिन यहाँ, कुछ भी गलत होने का सवाल ही नहीं था क्योंकि मोंगिया और प्रभाकर ने बस लक्ष्य का पीछा करते हुए ही शटर गिरा दिए। मोंगिया ने बहुत ही खूबसूरती से ऑफ़-स्टंप के बाहर की गेंदों को छोड़ा, कुछ को ब्लॉक भी किया, और जब भी इन दोनों ने कोई शॉट खेला, तो उनका बाउंड्री मारने का कोई इरादा नहीं था। पूरे सात ओवर में, एक भी आक्रामक शॉट नहीं, एक भी लॉफ़्टेड कोशिश नहीं, कोई जल्दबाज़ी नहीं; वे बस 'टुक-टुक' खेल रहे थे।

कमेंटेटर भी इस तरीके से काफी हैरान थे। एक समय पर, इंग्लिश कमेंटेटर हेनरी ब्लोफेल्ड ने कहा, "यह सब दिखाता है कि अगर खिलाड़ी खेल की भावना से नहीं खेलेंगे, तो वन-डे क्रिकेट काफी बोरिंग और बुरी तरह खत्म हो जाएगा।" 49वें ओवर में सिर्फ एक रन बना, और आखिरी ओवर मेडन था। मोंगिया ने सभी छह गेंदें ब्लॉक कीं। टीम इंडिया ने आखिरी सात ओवर में सिर्फ 15 रन बनाए। यह वेस्टइंडीज के लिए एक बड़ी जीत थी। और हां, मनोज प्रभाकर ने अपनी सेंचुरी पूरी की; वह 154 गेंदों पर 102 रन बनाकर नॉट आउट रहे, जबकि मोंगिया 21 गेंदों पर चार रन बनाकर नॉट आउट रहे।

सच कहूँ तो मुझे समझ नहीं आया कि क्या हुआ था क्योंकि उस उम्र में मुझे फिक्सिंग का मतलब भी नहीं पता था, इसलिए मैं उस एंगल से बिल्कुल नहीं सोच रहा था। मैंने बस मासूमियत से मान लिया कि वेस्टइंडीज की बॉलिंग शायद इतनी मज़बूत थी कि प्रभाकर और मोंगिया को इस तरह खेलने के लिए मजबूर होना पड़ा। लेकिन मैच रेफरी रमन सुब्बा रो को यह बिल्कुल पसंद नहीं आया। उन्होंने सीधे इंडिया के दो पॉइंट काट लिए क्योंकि उन्होंने खेल की भावना से नहीं खेला।

लेकिन बाद में ICC ने टेक्निकल ग्राउंड पर इस फैसले को पलट दिया क्योंकि मैच रेफरी के पास असल में यह पावर नहीं थी। फिर भी, फैस खुश नहीं थे। प्रभाकर और मोंगिया दोनों को सीरीज के बाकी मैचों से बाहर कर दिया गया।

सबसे हैरानी की बात यह है कि उस समय न तो BCCI ने इस घटना की कोई जांच की और न ही ICC ने। यह मामला वहीं दब गया। इंडिया ने फाइनल में वेस्टइंडीज को आसानी से हरा दिया, एक बहुत बड़ी जीत, और यह घटना अखबारों की हेडलाइन से और धीरे-धीरे लोगों के दिमाग से भी गायब हो गई, जब तक कि 3 साल बाद जून 1997 में मनोज प्रभाकर ने आउटलुक मैगज़ीन के लिए लिखे एक आर्टिकल में एक बड़ा खुलासा नहीं किया। उन्होंने लिखा कि जब कानपुर मैच में नयन मोंगिया बैटिंग करने आए, तो उन्होंने प्रभाकर से कहा कि मैनेजमेंट की तरफ से टारगेट के करीब पहुंचने के निर्देश थे, लेकिन मैच जीतने के नहीं। और इसी आर्टिकल में प्रभाकर ने कुछ और मैचों का भी जिक्र किया जहां कथित तौर पर फिक्स्सिंग हुई थी और कुछ दूसरे खिलाड़ी भी शामिल थे। उस समय आउटलुक मैगज़ीन काफी पॉपुलर थी, और यह आर्टिकल अचानक मीडिया का सेंटर पॉइंट बन गया।

BCCI इस पूरी सिचुएशन से काफी नाराज़ था क्योंकि उन्हें लगा कि प्रभाकर को मैगज़ीन से बात करने से पहले बोर्ड से बात करनी चाहिए थी। आखिरकार, BCCI ने भारत के रिटायर्ड चीफ जस्टिस, माननीय यशवंत विष्णु चंद्रचूड़ की अगुवाई में एक आदमी का इन्वेस्टिगेशन कमीशन बनाया। कमेटी ने मनोज प्रभाकर के सभी मैच-फिक्स्सिंग के आरोपों को खारिज कर दिया क्योंकि उनमें से किसी के भी पास कोई पक्का सबूत नहीं था।

नवंबर 2000 में हैसी क्रोनिए मैच फिक्स्सिंग कांड के बाद जब CBI ने अपनी जांच शुरू की, तो माधवन रिपोर्ट में नयन मोंगिया का बयान भी दर्ज किया गया था। कानपुर मैच के बारे में मोंगिया का कहना था कि मैच पहले ही हाथ से निकल चुका था, इसलिए यह टीम का मिलकर फैसला था कि चाहे कुछ भी हो जाए, विकेट नहीं गिरने चाहिए। मतलब, अगर हम मैच हार भी जाते, तो नेट रन रेट पर इसका ज़्यादा असर नहीं पड़ना चाहिए। लेकिन ये निर्देश असल में किसने दिए? इस पर मोंगिया ने कहा कि उन्हें याद नहीं है क्योंकि यह कमरे में आम चर्चा थी। मोंगिया ने यह भी कहा कि अगर टीम या मैनेजमेंट को उनकी बैटिंग अप्रोच से कोई दिक्कत होती, तो मैनेजर या कप्तान ग्लव्स बदलने के बहाने या वॉटर ब्रेक के ज़रिए मैसेज भेजते, जो अक्सर गेम में होता रहता है। अब, जब मोंगिया कहते हैं कि मैच तब खत्म हो गया था जब सात ओवर में 62 रन चाहिए थे और पांच विकेट बाकी थे, तो सच कहूं तो उन्हें सीरियसली लेना मुश्किल है। हां, मैं मानता हूं कि वह 90 का दौर था, लेकिन किसी भी दौर की कोई भी टीम पांच विकेट बाकी होने पर इतनी आसानी से हार नहीं मानती। मुझे यहां यह मानना होगा कि मोंगिया ने एक सही सवाल भी उठाया: जब हम

ब्लॉक कर रहे थे और सिंगल ले रहे थे, तो कोई मैसेज क्यों नहीं भेजा गया? मेरा पर्सनल मतलब है कि उस समय टीम इंडिया के टेल-एंडर्स की बैटिंग रैप्यूटेशन कुछ खास नहीं थी। यह आखिरी जानी-मानी बैटिंग जोड़ी थी, इसलिए टीम के सीनियर्स या मैनेजमेंट ने सोचा होगा: अगर ये दोनों बैट्समैन बिना विकेट खोए गेम को आगे ले जाते हैं, तो हमारे पास अच्छा चांस है। दिक्कत यह थी कि ये दोनों मैच को आगे तो ले गए, लेकिन आखिरी चार ओवर में रिव्चायर्ड रेट 15 तक पहुंच गया। ऐसे में आप क्या मैसेज देते? यह सिंपल कॉमन सेंस है; आपको हर ओवर में तीन-चार बाउंड्री चाहिए।

और जैसा कि उम्मीद थी, उस समय टीम इंडिया के कैप्टन मोहम्मद अज़हरुद्दीन ने इस बात से साफ़ मना कर दिया कि उन्होंने मोंगिया को ऐसे कोई इंस्ट्रक्शन दिए थे या विकेट बचाने के लिए खेलने की कोई बात हुई थी। उसी रिपोर्ट में, यानी जस्टिस चंद्रचूड़ कमेटी की रिपोर्ट में, द टेलीग्राफ़ के स्पोर्ट्स एडिटर, श्री लोकेंद्र प्रताप साही का भी इंटरव्यू लिया गया था, और उन्होंने ऑन रिकॉर्ड कहा कि जिस तरह से इन दोनों ने बैटिंग की, उससे सभी हैरान रह गए, और पहली बार उन्हें लगा कि खिलाड़ी सच में बुकीज़ के साथ शामिल हैं।

अब, मैं यहाँ यह बात बिल्कुल साफ़ कर देना चाहता हूँ: चंद्रचूड़ कमेटी को ऐसा कोई सबूत नहीं मिला जिससे यह साबित हो सके कि प्रभाकर या मोंगिया के साथ कोई कॉम्प्रोमाइज़ हुआ था, और आज तक, इस खास मैच में मैच-फिक्सिंग का कोई सबूत सामने नहीं आया है। इसलिए, हम सिर्फ़ अंदाज़ा लगा सकते हैं लेकिन पक्के तौर पर नहीं कह सकते कि उस दिन असल में क्या हुआ था। बॉलीवुड की अज़हर फ़िल्म में भी इस पार्टनरशिप को हाईलाइट किया गया था, जहाँ मनोज प्रभाकर को लगभग विलेन बना दिया गया है। असल में, मनोज प्रभाकर को अपनी सेंचुरी मनाते हुए दिखाया गया है।

मैंने उस मैच के बाद बैटिंग छोड़ दी और अपने बिज़नेस में बिज़ी हो गया। साथ ही, मैंने एक स्पिरिचुअल गुरु ढूंढा और बहुत सारा मेडिटेशन, स्पिरिचुअलिटी और लाइफ़ सीखा। मेरे गुरु ने मुझे सजेस्ट किया कि तुम क्रिकेट लाइन में रेंटर बन सकते हो और एक टॉप बुकी बन सकते हो। क्योंकि तुम मैटेरियलिस्टिक सक्सेस के बिना स्पिरिचुअल सक्सेस नहीं पा सकते। पहले 'भोग' फिर 'मोक्ष'। मैंने 2003 में इस बिज़नेस में दोबारा एंट्री की।

अध्याय 5

ज्योतिष एक दिव्य विज्ञान

ज्योतिष का महत्व

कितना अच्छा होगा अगर हर इंसान अपना भविष्य पहले से जान सके, और अगर हर इंसान सब कुछ पहले से जान सके। मान लीजिए कोई इंसान लंबी ड्राइव पर जाने वाला है, और आज उसे पहले से पता चल जाए कि आज उसकी ज़िंदगी का दिन शायद अच्छा न हो। आज हो सकता है कि उसके चार्ट में कोई खास एक्सीडेंट योग (कॉम्बिनेशन) दिख रहा हो। तो, अगर उसे यह पहले से पता चल जाए, तो क्या वह उस चीज़ से बच नहीं सकता?

ठीक उसी तरह, जैसे जब बारिश हो रही हो, तो हम लोग छाता इस्तेमाल कर सकते हैं, छाता इस्तेमाल कर सकते हैं। मौसम गर्म है, लेकिन हम AC इस्तेमाल करते हैं। ठीक उसी तरह, गर्मी से कोई नहीं बच सकता, कोई... गर्मी से कोई नहीं बच सकता, बारिश को कोई नहीं रोक सकता, लेकिन अगर पहले से पता हो, तो छाता लेकर घर से निकल सकता है, या AC चला सकता है।

अगर वह सावधानी बरतें, तो उसे कम से कम नुकसान होगा।

तो, ठीक उसी तरह से, अगर वही formula, ज्योतिष का वही formula क्रिकेट ज्योतिष में इस्तेमाल किया जाए—अगर मैच से पहले पता चल जाए कि, भाई, इस बार पहली inning के टॉस के बाद, और दूसरी inning जो दो घंटे बाद खेली जाएगी, दूसरी inning में खेलने वाली टीम... इन दोनों में से, जिस टीम का time अच्छा है, अगर वो टीम उस specific time में बैटिंग करती है, तो उसके जीतने का chance बहुत बढ़ जाता है।

तो, अगर जिनकी किस्मत में, जो लोग यह बात जानना चाहते हैं, जिनकी किस्मत में वह चीज़ काम की है—शायद हर चीज़ सबके काम की न हो—लेकिन कुछ लोगों के लिए, वह चीज़ काम की होगी।

अगर उनकी किस्मत (प्रारब्ध) में उस मैच के बारे में जानना है, तो वे ऐसे लोगों से मिलेंगे, ऐसे लोग आज उनकी ज़िंदगी में आएंगे, और जिनके ज़रिए उन्हें वह चीज़ पता चलेगी, और उसके ज़रिए वह अपने कर्मों (कर्म) से अपनी किस्मत (भाग्य) बदल सकते हैं।

ठीक उसी तरह, जैसे वह गर्मी में अपना AC चालू कर सकता है। क्या यह संभव है?”

ज्योतिष के कई हिस्से हैं। हस्तरेखा पढ़ना, चेहरा पढ़ना, राशिफल पढ़ना, वास्तु, टेरो कार्ड पढ़ना, हाथ से लिखना सीखना वगैरह। राशिफल पढ़ना ज्योतिष का एकमात्र हिस्सा है, जो न केवल सटीक भविष्यवाणी कर सकता है, बल्कि तारीख और समय भी बता सकता है।

लेकिन मुख्य कमी यह है कि 'सभी ज्योतिषी अच्छे होते हैं'?

नहीं

जैसे सभी डॉक्टर अच्छे नहीं होते। हालांकि मेडिकल थेरेपी एक साइंस है। इसलिए जब ज्योतिषी किसी घटना की भविष्यवाणी करने में फेल हो जाते हैं, तो इसका मतलब है कि या तो ज्योतिषी को जानकारी की कमी है या उसका बुरा समय चल रहा है जिससे उसका नाम बदनाम होगा और कभी-कभी क्लाइंट का बुरा समय चल रहा होता है, इसलिए उसे नेचर से सही जवाब नहीं मिल पाता। इसलिए वह गलत ज्योतिषियों के पास जाता है।

जब उसका सही समय आएगा, तो उसे सही जवाब मिलेंगे, भले ही उसने अपना ज्योतिषी बदला हो या नहीं।

ज्योतिष में, जीवन में कुछ भी अचानक नहीं होता। सभी चीजें निश्चित होती हैं (हालांकि यह 12% है) जो होना है, वो होकर रहेगा

अध्याय 6

पेंटर आध्यात्मिक बन जाता है

पृष्ठ 01

मैं उनसे लगभग 10 साल बाद मिला था। उन्होंने अपना लुक बदलकर पूरा सफ़ेद कर लिया था। वे 'पूरा सफ़ेद आदमी' बन गए थे—सफ़ेद पैंट, सफ़ेद शर्ट और सफ़ेद जूते। उन्होंने अपने बाल भी सफ़ेद करवा लिए थे। वे ज़्यादा बूढ़े नहीं थे, फिर भी उनके बाल सफ़ेद कैसे हो गए? मैं कन्फ्यूज़ था। एक एस्ट्रोलॉजर होने के नाते, मुझे पता है कि सफ़ेद रंग वीनस और मून का होता है। जिस लाइन में वे काम करते थे, उसमें वीनस से EASY पैसा आता है, और अगर मून अच्छा हो, तो MIND कंट्रोल में रहता है। क्या उन्होंने यह लुक एस्ट्रोलॉजिकल सलाह के आधार पर बनाया था? मेरे मन में कई सवाल थे। इससे पहले कि मैं उनसे कई सवाल पूछ पाता, उन्होंने कहा, "आज हम बात नहीं कर पाएंगे। मुझे अपना नंबर दो, टाइम फिक्स करो, और किसी दिन मुझसे मिलो।"

और मैं उस दिन का इंतज़ार करने लगा जब हमारा अपॉइंटमेंट फिक्स हो गया। मैं पूरी रात सो नहीं पाया, लगातार सोचता रहा कि उसका लुक तो पूरी तरह बदल गया था, लेकिन उसकी मुस्कान में कोई बदलाव नहीं आया था; असल में, वह मुझे और भी ज़्यादा कूल लग रहा था। उसकी मोटी सोने की चेन और हीरे और पत्थर की अंगूठियों से पता चल रहा था कि वह एक बड़ा बुकी बन गया था, लेकिन उसका EGO ज़ीरो था।

हम एक कमरे में मिले, जो शायद उसके दोस्त का था या उसका अपना, मुझे नहीं पता। कोई मैच चल रहा था; वह मैच देखता, फिर अपने मोबाइल पर कुछ करता, और फिर मेरे सवाल का जवाब देता रहता। फिर उसने मुझसे एक सवाल पूछा, "आप क्रिकेट में ज्योतिष का इस्तेमाल क्यों नहीं करते?"

मैंने कहा कि मैच फिक्स होते हैं, तो क्या आपको लगता है कि कुंडली काम करेगी?

उन्होंने जवाब दिया, "अगर यह 50% भी काम करता है, तो भी यह पंटर के लिए अच्छा होगा।"

उसने एक बार फिर मेरा दिल जीत लिया। बुकी होने के बावजूद, वह सट्टेबाजों के बारे में सोच रहा है—क्या उसका दिल सच में इतना बड़ा है?

फिर उन्होंने कहा कि अगर किसी पंटर की किस्मत में पैसा है, तो वह आपसे जुड़ जाएगा, और जो RULES को फॉलो करेगा वह EASILY नहीं हारेगा। और अगर नुकसान का घर बंद हो जाए और पंटर DISCIPLINED पंटर बन जाए, तो वह कम से कम अपनी NEEDS तो पूरी कर ही सकता है।

"अगर कोई इंसान अपनी ज़रूरतें पूरी करना शुरू कर दे, तो हमारा मोटो पूरा हो जाता है।"

मैंने दिल से उनकी सोच को सलाम किया, और मुझे एक अलग तरह का करंट महसूस हुआ। मुझे लगा जैसे मुझे मेरा MOTO (मकसद) मिल गया हो।

एस्ट्रोलॉजी, स्पिरिचुअलिटी और बेटिंग रूल्स को फॉलो करके ऐसे PUNTERS तैयार किए जा सकते हैं जो कम से कम अपने परिवार की ज़रूरतें तो पूरी कर सकें। और अगर उनकी किस्मत में बुकी को पैसे देना लिखा भी हो, तो उन्हें अचानक नुकसान न हो—उस टाइम ड्यूरेशन को बढ़ाया जा सकता है। मान लीजिए किसी की किस्मत में 2 साल के लिए बुरा टाइम लिखा है, और इन 2 सालों में वे बुकी को 10 लाख देंगे, लेकिन RULES को फॉलो करके उस नुकसान की रकम को कम किया जा सकता है। हो सकता है कि ग्रहों की एनर्जी को डायवर्ट किया जा सके। और अगर GURU का दिया फॉर्मूला सीरियसली अप्लाइ किया जाए, तो इसमें कोई शक नहीं कि MIRACLE हो सकता है। यह KARMA और LUCK का ऐसा मिक्सचर बन सकता है कि आने वाले टाइम में एक मिसाल कायम हो सकती है—कि अगर कोई SPIRITUALITY और ASTROLOGY को मिलाकर एक RULE बुक बनाकर आगे बढ़े, तो महीने की कुछ खास तारीखों पर पैसे आना मुश्किल नहीं है। और अगर

उस आने वाले पैसे पर भी कुछ काम किया जाए, तो वह पैसा कई गुना होकर वापस आएगा। और अगर यह SECRET ज़्यादा से ज़्यादा लोगों तक पहुंचाया जाए, तो उनमें से कुछ लोग ज़रूर ऐसे होंगे जिनकी किस्मत में पैसा लिखा होगा। कुदरत अपने आप उन तक वह KNOWLEDGE पहुंचा देगी। मेरा दिमाग बहुत तेजी से चल रहा था।

पहली बार मुझे लगा कि गुरु का मुझसे मिलना, मेरा एस्ट्रोलॉजर बनना, और आज गुरु से मोटिवेट होना—यह सब पहले से ही FIXED था। और कोई तीसरी शक्ति है जो यह सब कर रही है। मैं तो बस बीच में एक कनेक्टिंग लिंक हूँ। नेचर ने बस मुझे चुना है। अब, मैंने भी इसे नेचर पर छोड़ दिया है। जो होगा, देखा जाएगा।

इरादा साफ़ है, बाकी सब ऊपर वाले पर है।

मैंने मन ही मन एक बार फिर उन्हें धन्यवाद दिया और वहां से चला आया।

मुझे बहुत काम करना था, और वह भी बहुत जल्दी। पेंटर्स बर्बाद हो रहे थे और बुकीज़ फल-फूल रहे थे।

आज मैंने GURU में जो सोच देखी, वैसी सोच मैंने किसी और में नहीं देखी। कोई भी बुकी पेंटर्स के बारे में नहीं सोचता; उन्हें सिर्फ़ अपनी बुक के प्रॉफ़िट की चिंता होती है।

लेकिन जैसा कि वे कहते हैं, है ना? सिर्फ़ एक व्यक्ति ही पूरी दुनिया को बदलने के लिए काफ़ी है।

मैं अपनी ज़िंदगी की दूसरी पारी के लिए निकल पड़ा।

ज़ेन पेंटर – आकर्षण के नियम और इमोशनल डिटैचमेंट में महारत हासिल करना

पेज 02

पेंटर को सिर्फ़ मैच देखना होता है।

अगर कोई विकेट गिर जाए तो कोई उत्साह नहीं होना चाहिए।

चौका या छक्का लगने पर भी यही बात लागू होती है - तटस्थ रहें।

कैच छूटने पर कोई रिएक्शन नहीं (भले ही आप फील्डिंग टीम को सपोर्ट कर रहे हों, और न ही आपको किसी फेवरेबल एक्टिविटी पर कोई रिएक्शन देना चाहिए)।

आकर्षण का नियम काम करता है।

अगर आप मैच के नतीजों को लेकर टेंशन लेते रहेंगे, तो असल में यह आपकी टीम को खोने का डर या पैसे खोने का डर है।

इसका आप पर गलत असर पड़ता है।

अपना प्रॉफ़िट किसी के साथ शेयर न करें-इसे सीक्रेट रखें (GUPT)।

कृष्ण-अर्जुन का उदाहरण लीजिए।

आपको सिर्फ़ लड़ना चाहिए; जीत या नतीजों की इच्छा या ध्यान न दें।

एक नौकरी ढूंढने वाला बिना किसी उम्मीद के इंटरव्यू दे रहा है।

एक वकील बिना किसी उम्मीद के केस लड़ रहा है।

एक पंटर ने अपनी पहली बेट लगाई और अब बिना किसी उम्मीद के दूसरी बेट का इंतज़ार कर रहा है (अपना रिस्क कम करने या अपने EXIT प्लान को पूरा करने के लिए)।

आसान शब्दों में कहें तो मैच में कोई इमोशन न डालें।

अपना काम करो और बिना किसी इमोशन के मैच देखो।

आपको किसी टीम से जुड़ने की ज़रूरत नहीं है।

इलेक्ट्रोमैग्नेटिक तरंगों को समझना:

जब आप डिप्रेस्ड होते हैं, तो आप स्ट्रेस में आ जाते हैं।

जब आप स्ट्रेस लेते हैं, तो यूनिवर्स आपको एक नेगेटिव वेव भेजेगा।

घोषणापत्र:

भगवान से वही मांगो जो तुम चाहते हो, ठीक वैसे ही जैसे हम अपने पिता से चाहते हैं। कोई

अगर-मगर नहीं, कोई शक नहीं-बस ऑर्डर दो।

एक और उदाहरण: आप किसी रेस्टोरेंट में ऑर्डर कैसे देते हैं?

अगर आप 'बटर पनीर' मांगते हैं, तो आपको पूरा भरोसा है कि कुछ ही मिनटों में वेटर उसे आपकी टेबल पर ले आएगा।

जब आप ऑनलाइन शॉपिंग करते हैं तो आप ऑर्डर कैसे करते हैं? आपको कोई शक नहीं है कि वे इसे डिलीवर करने में फेल नहीं होंगे।

यही फ़ॉर्मूला यहाँ भी लागू होना चाहिए। अगर आपको कार चाहिए, तो सर्च करें कि कौन सा ब्रांड और कौन सा रंग, और सीट का रंग क्या होगा। साफ़-साफ़ ऑर्डर करें। कॉसमॉस आपको यह ज़रूर देगा, 100% पक्का।

असल में, बेटिंग इनकम वह इनकम है जो बिना ज़्यादा मेहनत के आ रही है।

जुआ वह पैसा है जो भगवान की कृपा (कृपा) से आता है, जो बिना ज़्यादा मेहनत के मिलता है।

बहुत ज़्यादा मेहनत से कमाया हुआ पैसा EGO लाता है।

पिता, भाई या किसी पुश्तैनी बिज़नेस से होने वाली इनकम या फ़ायदा अपने साथ दूसरी नेगेटिव चीज़ें भी लाता है।

आज़ा:

आप अपने दिमाग को जो भी आदेश देंगे, वही होगा।

इसीलिए कहा जाता है कि माँ सरस्वती दिन में कम से कम एक बार जीभ पर ज़रूर विराजती हैं।

इसलिए जो बोलना है बोलो, जो नहीं बोलना है मत बोलो।

इस तरह के नेगेटिव कमांड देना बंद करें:

”आज का दिन नुकसान में बदल गया।”

”धत् तेरे की, बुकी ने इसे एकतरफ़ा ले लिया।”

”मेरी किस्मत ही ख़राब है।”

”पैसा कम आता है और ज़्यादा जाता है।”

वगैरह।

नहीं तो, यह आपकी ज़िंदगी में बार-बार आएगा

अध्याय 7

बेटिंग में 6 मेंटल ट्रैप को कंट्रोल करना बेट ...

पृष्ठ 01

एक पंटर को सावधान रहना चाहिए और इंसान के सबकॉन्शियस ब्रेन में 'साध्वीकार' या 6 माइनस पॉइंट्स को समझना चाहिए।

अगर कोई पंटर यह जानता है और कंट्रोल करता है कि उसने कब बेट लगाई, तो मैच में उसके हारने का नंबर दिन-ब-दिन बहुत कम होता जाएगा। पढ़ें और देखें।

• मोह और वैराग्य

• लालची मोड़ दानी

• अहंकार और विनम्रता

• काम और प्यार और भावनाएं

• क्रोध और करुणा (दया दया)

• ईर्ष्यालु और संतुष्ट

पेज 02

6 माइनस पॉइंट्स को समझना

1. मोह (लगाव) और वैराग्य

MOH आपको दिन में सपने देखने पर मजबूर करता है। यह आपको असलियत से दूर कर देता है। मैच देखते समय, आप असली गेम पर कम और उसके रिज़ल्ट और आउटकम पर ज़्यादा ध्यान देने लगते हैं। 'MOH' आपको यह भ्रम देने में कामयाब हो जाता है कि आपकी टीम मैच जीत गई है और पैसा आपके पास आ गया है। अब, उस सोचे हुए पैसे से पैदा होने वाला लगाव ही MOH है। जब कोई पंटर मैच में कई बार लड़खड़ाता है और उसे भारी नुकसान होता है, तो उसे आखिरकार समझ आता है। तभी नतीजे से ध्यान हटता है, और पंटर असलियत में वापस आता है।

2. लालच और दानी बनना

जब किसी इंसान को लगातार सफलता मिलती है, तो उसका लालच बढ़ जाता है। सट्टेबाज अब मैच के नतीजे को सिर्फ़ बड़े मुनाफ़े का ज़रिया समझने लगता है। कुछ मैचों में हुई कमाई से उसका लालच बढ़ता है, और वह सोचता है—क्यों न एक ही बार में बहुत बड़ी रकम का रिस्क लिया जाए? यह तब होता है जब 'शनि' (सैटर्न) एक झटका मारता है और चेतावनी देता है: "बेटा, मैं तुम्हें जो कुछ भी दे रहा हूँ, उसे लेता रहो; अगर तुम ज़्यादा ऊपर उड़े, तो मैं तुम्हें नीचे गिरा दूँगा।" अगर इस गिरावट के बाद व्यक्ति की आँखें खुल जाती हैं, तो लालच की वह एनर्जी उसे दानी (एक उदार दाता) में बदल देती है।

3. अहंकार और विनम्रता

ऐसा तब होता है जब कोई इंसान भगवद गीता में कृष्ण की दी हुई सीख भूल जाता है: "तुम कुछ नहीं कर सकते। जो कुछ भी होता है, वह मैं ही करता हूँ; मैं ही वह हूँ जो काम करवाता है।" लेकिन जब कोई पंटर कुछ मैच जीत जाता है, तो वह सोचने लगता है कि 'वह' ही जीत रहा है। वह यह समझने में नाकाम रहता है कि जीत उसके प्रारब्ध (किस्मत/भाग्य) में पहले से ही लिखी हुई थी। जब भी वह यह सोचने लगता है कि उसने यह किया है, तो उसका EGO बढ़ जाता है, और फिर शनि

न्याय (न्याय) देने के लिए तैयार हो जाता है। उस समय, उसके अहंकार को तोड़ने का समय आ जाता है।

वह लगातार नुकसान उठाता है जब तक उसे यह एहसास नहीं हो जाता कि सब कुछ ऊपर वाले ने किया है। एक बार जब उसे यह एहसास हो जाता है, तो EGO की एनर्जी HUMBLENESS में बदल जाती है।

4. काम (इच्छा/वासना), प्यार और भावनाएं

काम का मतलब है इच्छा।

हर इंसान की ज़िंदगी में ज़रूरतें होती हैं। जब ज़रूरतें पूरी हो जाती हैं, तो वह और ज़्यादा चाहता है; जब यह इच्छा लगातार बढ़ती है, तो इसे काम कहते हैं। जब कोई चीज़ एक्सट्रीम पर जाती है, तो वह गिर जाती है।

जब कोई पंटर मैचों के ज़रिए अपनी बेसिक ज़रूरतें पूरी करता है, तो उसे कोई प्रॉब्लम नहीं होती या बस छोटी-मोटी प्रॉब्लम होती हैं। लेकिन जब वह अपनी बहुत ज़्यादा इच्छाओं को पूरा करने के लिए कमाना शुरू करता है, तो शनि उसे सबक सिखाने के लिए आगे आता है। जब उसे नुकसान होने लगता है, तो उसे एहसास होता है कि वह असल में क्या कर रहा था। वह समझता है कि एक दिन सब कुछ चला जाएगा, और यादों में सिर्फ प्यार ही बचेगा। हम अक्सर भूल जाते हैं कि हमारे दादाजी हमारे लिए क्या चीज़ें छोड़कर गए थे, लेकिन हमें उनका दिया हुआ प्यार आज भी याद रहता है।

फिर, काम की एनर्जी प्यार की एनर्जी में बदल जाती है, और वह प्रकृति से मिलने वाली हर चीज़ से प्यार करने लगता है।

5. क्रोध और करुणा

क्रोध एक ऐसा तत्व है जो न केवल हमारे रिश्तेदारों, दोस्तों या उन लोगों को जलाता है जिन पर हम गुस्सा करते हैं, बल्कि यह हमारी खुद की सेहत को भी खराब कर देता है।

जब कोई सट्टेबाज कुछ मैच हार जाता है, या जब मैच उसकी मर्जी के हिसाब से नहीं चलते, तो गुस्सा हावी हो जाता है। वह क्रोध (गुस्से) वाली सोच के साथ सट्टा लगाना शुरू कर देता है। यह सोचना कि "मुझे सट्टेबाज को खत्म करना है" क्रोध का ही एक रूप है। जब यह तेज़ी से होता है—सिर्फ सट्टे में ही नहीं बल्कि रोज़मर्रा की ज़िंदगी में भी—तब शनि आता है और ज़रूरी सबक सिखाता है। जब सट्टेबाज को एहसास होता है कि उसने बहुत बड़ी गलती की है, तो उसका गुस्सा करुणा (करुणा या दया) एनर्जी में बदल जाता है।

6. ईर्ष्या और संतुष्ट होना

“किसी के पास लगजरी कार है, किसी ने लगजरी बंगला बना लिया है...”

जब इस तरह की भावनाएं किसी सट्टेबाज के मन में आती हैं, तो वह यह जाने बिना सट्टा लगाना शुरू कर देता है कि वह जलन की भावना में जल रहा है। वह सिर्फ बड़ा कमाने और उनसे मुकाबला करने के लिए बहुत ज़्यादा सट्टा लगाता है।

फिर शनि अपना काम शुरू करता है, और सट्टेबाज लगातार हारता है। हालात से बुरी तरह हारने के बाद, उसे एहसास होता है कि वह क्या कर रहा था। फिर, जलन की एनर्जी सैटिस्फैक्शन मोड में बदल जाती है। उसे एहसास होता है कि जो कुछ भी उसकी किस्मत में लिखा है, उसे कोई नहीं बदल सकता। उसे कम से कम वह तो मिलेगा जो उसके लिए तय किया गया था (भले ही वह 12% ही क्यों न हो)। वह जलन को पीछे छोड़ देता है और सिर्फ सट्टेबाज़ी में ही नहीं, बल्कि अपनी ज़िंदगी के हर हिस्से में सैटिस्फाइड हो जाता है।

पेज 03

4% आग – अपनी मेंटल बैटरी को बचाए रखना

शरीर की एनर्जी और बैटरी को समझना

शरीर में 4% आग होती है।

असल में यह शरीर की बैटरी है।

लेकिन इंसान यह नहीं जानते कि उस बैटरी का इस्तेमाल कैसे किया जाए।

ज़रा सोचिए, हम सुबह-सुबह फ्रेश क्यों महसूस करते हैं?

क्योंकि बैटरी को कोई काम नहीं करना पड़ता।

हम जितना ज़्यादा सोचते हैं, बैटरी उतना ही ज़्यादा लोड लेती है। और हमें यह समझना होगा कि हम असल में किस बारे में सोचते हैं।

हम या तो बीते हुए कल के बारे में सोचते हैं या आने वाले कल के बारे में। बस यही असली प्रॉब्लम है। बैटरी लगातार डिस्चार्ज होती रहती है।

अगर हम वर्तमान में रहकर जीना सीख लें, तो जीवन में चमत्कार होने लगेंगे। क्योंकि वर्तमान में रहने के लिए किसी एनर्जी की ज़रूरत नहीं होती।

पहली बॉल फेंकी गई, बस। अब दूसरी बॉल फेंकी गई और एक सिंगल लिया गया, बस। दिमाग ने कुछ भी नहीं सोचा, बस देखा। दिमाग बस हर बॉल और हर रन को देख रहा था।

कोई अतीत की कल्पना नहीं।

कोई भविष्य प्री-लिर्विंग नहीं।

हमें अभी में जीना सीखना होगा।

अब सवाल यह है कि तब बैटरी का क्या उपयोग होगा?

अध्याय 8

बेटिंग मार्केट और सट्टेबाजों की किस्मत

पृष्ठ 01

वैश्विक सट्टेबाजी बाजार

ग्लोबल क्रिकेट बेटिंग मार्केट की इंडस्ट्री रेवेन्यू वैल्यू लगभग USD 43.5 बिलियन है और यह तेज़ी से बढ़ रहा है। पूरी ग्लोबल इकॉनमी में, जिसमें लीगल iGaming, अनरेगुलेटेड प्लेटफॉर्म और अंडरग्राउंड बुकमेकर शामिल हैं, इस खेल पर हर साल अरबों डॉलर का दांव लगाया जाता है, कुछ लॉन्ग-टर्म अनुमानों के मुताबिक यह खासियत 2032 तक USD 151 बिलियन से ज़्यादा हो जाएगी।

बाज़ार का विश्लेषण और सांख्यिकी

अनुमानित सालाना रेवेन्यू: ~\$43.5 बिलियन से \$76+ बिलियन, जो कैज़ुअल और रीजनल टूर्नामेंट बेटिंग पर निर्भर करता है।

अनुमानित ग्रोथ: 10% से ज़्यादा की कंपाउंड एनुअल ग्रोथ रेट (CAGR) से बढ़ रहा है।

मुख्य वजह: T20 क्रिकेट में सबसे ज़्यादा बेटिंग होती है, क्योंकि इसमें मैच कम समय के होते हैं और इंटरनेशनल फ्रैंचाइज़ लीग (जैसे, IPL) अक्सर होती हैं।

बेटर टाइप के हिसाब से रेवेन्यू डिस्ट्रीब्यूशन

कैज़ुअल बेटर्स: मार्केट शेयर का 39.2%

बार-बार सट्टा लगाने वाले: मार्केट शेयर का 34.5%

हाई-वैल्यू प्लेयर्स: मार्केट शेयर का 18.4%

प्रोफेशनल बेटर्स: मार्केट शेयर का 7.9%

क्षेत्रीय प्रभुत्व

एशिया-पैसिफिक: दुनिया भर में सबसे बड़ा मार्केट शेयर इसकी वजह है क्योंकि यहां के इलाके बहुत ज़्यादा देखते हैं और डिजिटल एक्सेस भी है। खास तौर पर, भारत, सख्त लोकल टैक्स कानूनों के बावजूद सबसे ज़्यादा वॉल्यूम वाले इलाकों में से एक बना हुआ है।

उभरते बाज़ार: इंटरनेशनल T20 और लोकल लीग टूर्नामेंट की बढ़ती लोकप्रियता के कारण यूरोप, UK और नॉर्थ अमेरिका में सट्टेबाजी की गतिविधियां बढ़ रही हैं।

पेज 02

भारत में वैश्विक सट्टेबाजी बाजार

भारत का क्रिकेट बेटिंग मार्केट हर साल USD 100 बिलियन से USD 150 बिलियन के बीच होने का अनुमान है, और देश में लगाए जाने वाले सभी स्पोर्ट्स बेटिंग का 90% तक हिस्सा क्रिकेट से आता है। सख्त गैबलिंग नियमों के कारण, इस बड़ी इंडस्ट्री का ज़्यादातर हिस्सा रेगुलेटेड प्लेटफॉर्म के बजाय इनफॉर्मल और ऑफशोर चैनलों के ज़रिए चलता है।

बाजार का पैमाना और वित्तीय स्थिति

टोटल वॉल्यूम: अनऑफिशियल अनुमानों के मुताबिक, भारत के गैर-कानूनी बेटिंग मार्केट का कुल साइज़ हर साल लगभग USD 100 बिलियन से USD 150 बिलियन है।

हर मैच का दांव: भारतीय टीम के एक वन-डे इंटरनेशनल (ODI) मैच पर USD 200 मिलियन तक का दांव लगाया जाता है।

क्रिकेट शेयर: भारत में खेलों पर लगाए जाने वाले कुल पैसे का लगभग 80% से 90% हिस्सा क्रिकेट का होता है।

भागीदारी और जनसांख्यिकी

लाखों बेटर्स: एक अनुमान के मुताबिक 340 मिलियन भारतीय क्रिकेट बेटिंग में हिस्सा लेते हैं, खासकर बड़े टूर्नामेंट्स के दौरान।

बड़े इवेंट्स: इंडियन प्रीमियर लीग बेटिंग एक्टिविटी का सबसे बड़ा ड्राइवर है, जो हर सीज़न में अरबों डॉलर का दांव लगाता है।

ग्लोबल स्टैंडिंग: भारतीय बेटर्स क्रिकेट पर चीन के फुटबॉल से ज़्यादा दांव लगाते हैं, जिससे यह दुनिया के सबसे बड़े सिंगल-स्पोर्ट बेटिंग डेमोग्राफिक्स में से एक बन गया है।

पेज 03

•चेतन क्रियाएँ और ब्रह्मांडीय नियम: सट्टेबाजी, ग्रहों और मन पर एक सनातन दृष्टिकोण

34 करोड़ भारतीय बेटिंग करते हैं। अगर 1% पंटर्स (34 लाख) को भी यह बता दिया जाए कि 'अगर आप बेटिंग करते हैं, तो होश में (अपने होश में) करें,' तो इससे फर्क पड़ेगा।

सब जानते हैं कि शराब नहीं पीनी चाहिए, लेकिन हर कोई शराबी नहीं बनता। ज्योतिष के नज़रिए से, ग्रहों के कुछ ऐसे कॉम्बिनेशन (राहु, चंद्रमा, शनि, वगैरह के कॉम्बिनेशन) होते हैं कि शराब पीने से कोई बुरा असर नहीं होता। सब जानते हैं कि तंबाकू खतरनाक है। लेकिन हम बहुत से लोगों को देखते हैं जो तंबाकू खाते हैं—यहां तक कि औरतें भी हुक्का पीती हैं—लेकिन वे फिट रहते हैं। क्योंकि उनके ग्रह उन्हें इजाज़त देते हैं, और उनके शरीर पर कोई बुरा असर नहीं पड़ता। मैं इन बातों की वकालत नहीं कर रहा हूँ। मैं बस यह कह रहा हूँ कि दुनिया में कुछ भी बुरा नहीं है। भगवान ने एक भी चीज़ बेकार नहीं बनाई है। भांग धीरे-धीरे कई देशों में लीगल होने का स्टेटस पा रही है। कुछ रिसर्च से पता चलता है कि कॉन्संट्रेशन बढ़ाने में भांग का इस्तेमाल बहुत फायदेमंद रहा है।

अगर हम यही फ़ॉर्मूला क्रिकेट बेटिंग या स्पोर्ट्स बेटिंग पर लागू करें, तो यह एनालिसिस किया जा सकता है कि कोई भी सरकार इसे हमेशा के लिए बैन नहीं कर सकती (वे इसे बैन कर सकते हैं, लेकिन इसे रोक नहीं सकते)। जिन देशों ने इसे लीगल किया है, उन्होंने वहां कानून बनाए हैं, और लोगों को बेटिंग के नेगेटिव पहलुओं के बारे में जागरूक किया जाता है। इस बात पर नज़र रखी जाती है कि नुकसान की भरपाई के लिए इस्तेमाल किया गया पैसा कहां से आया। क्या यह लोन लेकर चुकाया गया था? क्या कोई बहुत ज़्यादा नुकसान हुआ था? इसी तरह के नियम बनाकर, जिन देशों ने इसे बैन किया है, उन्हें धीरे-धीरे बैन हटाना चाहिए और जागरूकता कैम्पेन चलाने चाहिए।

मैं ऐसे कई लोगों को जानता हूँ जो 20 साल से बेटिंग लाइन में काम कर रहे हैं। लेकिन उन्हें बेटिंग की लत नहीं है। आज मन किया तो लगा लिया, नहीं तो 10 दिन नहीं लगाया। आज नुकसान हो गया तो कोई बड़ी बात नहीं। आज 1 लाख आ गया तो कोई एक्साइटमेंट नहीं। ऐसे लोगों की कुंडली देखी जाए तो ये वो लोग होंगे जिनके शनि या राहु का 5th, 10th, या 11th हाउस से कोई न कोई कनेक्शन होगा। साथ ही, चांद बहुत अच्छी पोजीशन में होगा। क्योंकि चांद उनकी विलपावर को कंट्रोल में रखता है। वे जीतने पर एक्साइटेटड नहीं होते, और न ही हारने पर डिप्रेशन में जाते हैं। अगर वे घाटे में हैं, तो या तो उनके पास कुछ ऐसा पैसा आया है जो सिर्फ़ जाने के लिए आया था—या तो वे उस पैसे को खर्च करके, या दान-पुण्य करके, या सट्टे में हारकर खत्म कर देते हैं। नहीं तो, वह पैसा या तो डॉक्टर, पुलिस, इनकम टैक्स डिपार्टमेंट, या वकील वगैरह ले जाएंगे। कुंडली देखकर बताया जा सकता है कि उस पैसे के जाने का समय कब आएगा। एक अच्छा ज्योतिषी अपने क्लाइंट को उस समय खर्च करने के लिए पहले से बता देता है।

शनि न्याय का ग्रह है। अगर गलत पैसा आया है, तो वह अपने एजेंट राहु और केतु के ज़रिए उसे ले जाने का काम करेगा। इसीलिए बहुत से लोग सिर्फ नुकसान देने के लिए ही सट्टे की लाइन में आते हैं। अब अगर वे यही नुकसान देने का काम जागरूकता के साथ करेंगे, तो सिर्फ पैसा जाएगा। घर की शांति नहीं जाएगी। सेहत पर कोई बुरा असर नहीं पड़ेगा।

“इस खास समय में जीवन में दुख आएगा।”

अब, यह इंसान पर निर्भर करता है कि वह उस समय को हंसकर गुजारता है या रोकर। रोकर गुजारने की मुख्य समस्या सिर्फ यह नहीं है कि उनके घर का माहौल खराब हो जाता है, या उनकी मानसिक शांति भंग हो जाती है, या स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं होती हैं। बल्कि वहां ब्रह्मांड का सूत्र लागू होता है कि, “तुम जैसी तरंगें भेजोगे, मैं भी वैसी ही लौटाऊंगा।”

जबपृष्ठ 04

एक सेकंड में, मन पूरी दुनिया घूम लेता है।

जब कोई पंटर प्रेजेंट में या मैच में जीना सीखता है। मैच चल रहा है, बॉल बॉल की तरफ जा रही है और बैट्समैन ने सिंगल लिया और अब दूसरी बॉल आ रही है और इस बार बैट्समैन ने सिंगल नहीं लिया वगैरह-वगैरह। इस बार बैटरी डिस्चार्ज नहीं हुई क्योंकि वह प्रेजेंट में जीता है। जब कोई पंटर न तो पास्ट में जीता है और न ही फ्यूचर में, तो उसका साक्षी भाव डेवलप होता है और उसकी एनर्जी पूरी तरह से प्रेजेंट टाइम में काम करती है। जो कि अभी है। कुछ भी पास्ट नहीं है और कुछ भी फ्यूचर नहीं है। तब उसकी 72% वॉटर एनर्जी काम करना शुरू कर देती है। याद रखें कि सिर्फ 12% फेट (अर्थ तत्व) फिक्स्ड है।

जिसे बदला नहीं जा सकता। आपने पिछले जन्म में या अभी जो भी किया हो। आपको कर्म फल मिलने के लिए तैयार रहना होगा, जो सिर्फ 12% है। जैसे हमारे माता-पिता कौन होंगे? हमारा शरीर कैसा होगा? मेरे रिश्तेदार कौन होंगे? इस तरह के नतीजे फिक्स होते हैं।

लेकिन पंटर को पता चलता है कि 72% किस्मत बदली जा सकती है। इसके लिए कृपा चाहिए, गुरु चाहिए, पत्थर चाहिए, दान चाहिए, मैनिफेस्ट चाहिए वगैरह।

जब उसका TIME आता है, तब ज्ञान आता है। तब वह मान लेता है कि ‘वह कुछ भी नहीं है’

कृष्ण उसके जीवन में आते हैं। फिर अर्जुन आत्मसमर्पण कर देता है। ‘जो होना है, वो होकर रहेगा, ईगो पिघल जाता है, आदमी सोचता है कि उसने किया, सट्टेबाज कुछ मैच जीतते हैं, उसे लगता है कि वह जीत गया। शनि की साज के बाद, आँखें खुल जाती हैं। लालच चला जाता है। फिर असली साक्षी भाव आता है, और वह सब कुछ भगवान या कृष्ण या किस्मत या कुदरत पर छोड़ देता है, जो भी नाम आप दे सकते हैं। हम कहते हैं, “समय बुरा है,” बुरा समय आएगा।

जब हम कहते हैं, "हमें नुकसान हो रहा है," तो नुकसान होगा।

हम कॉसमॉस में जो भी वेब्स या वाइब्स भेजते हैं (यह एक प्रूवन साइंस है कि शब्द कभी नहीं मरते, वे कॉसमॉस में वाइब्रेट करते हैं), यह बहुत ज़रूरी है कि हम कॉसमॉस में कौन सी वेब्स या शब्द भेज रहे हैं। हमें इस बारे में बहुत सावधान रहना चाहिए। यह सबक सभी को सिखाया जाना चाहिए।

पुराने ज़माने में गुरुकुल एजुकेशन सिस्टम चलता था। प्राइमरी लेवल पर ज्योतिष और सनातन धर्म की बेसिक जानकारी दी जाती थी। हर सनातनी स्टूडेंट षड्विकार या इंसानियत के 6 नेगेटिव इमोशंस को जानता है। वे शुरू से ही इस पर काम करते हैं। वे साक्षी भाव जानते हैं—मतलब गुस्सा आएगा, यह इंसान का नैचुरल इमोशन है, लेकिन वह इसे न्यूट्रल होकर बस देखता है। क्योंकि वे शरीर में आत्मा को जानते हैं।

आत्मा कभी नहीं मरती। गुस्सा आया, वह जल्द ही चला जाएगा। आत्मा किसी भी कारण के लिए ज़िम्मेदार नहीं है। काम शरीर और मन से होता है। आत्मा न तो शरीर है और न ही मन।

मन या मन हमेशा यात्रा करता है। मन प्रकाश से भी तेज़ है।

अध्याय 9

क्रिकेट ज्योतिष अनुसंधान संकेत

पृष्ठ 01

मंगल - योद्धा ग्रह संकेत

जब मंगल स्पोर्ट्स से जुड़े घरों या टाइमिंग चार्ट में मज़बूत दिखाई देता है, तो आप अग्रेसन, कॉन्फिडेंस, लड़ने का जोश और कमबैक एनर्जी देख सकते हैं। गेम में उतार-चढ़ाव हो सकता है।

निडर रवैया दिखाने वाली टीम

मजबूत गेंदबाजी आक्रामकता

दबाव के बाद अप्रत्याशित वापसी

क्रिकेट में हिम्मत सिर्फ फिजिकल नहीं होती; कभी-कभी टाइमिंग भी एग्रेसिव लगती है।

मंगल ग्रह ज़मीन, खेल के मैदान या पिच को भी दिखाता है, जिसे मंगल ग्रह देखता है।

हमें यह कैलकुलेट करना होगा कि गेम किस ग्राउंड पर खेला जाएगा, कौन सी टीम और कौन सा कैप्टन ज़्यादा सूट करेगा।

मान लीजिए पहली इनिंग 19:30pm बजे शुरू होगी और दूसरी इनिंग लगभग 2 घंटे बाद खेली जाएगी

दोनों राशिफल बनाएं। देखें कि किस राशिफल में मंगल ग्रह दूसरी राशिफल से ज़्यादा मज़बूत है और किस राशिफल में मंगल ग्रह दूसरों से ज़्यादा मज़बूत है।

दशा/महादशा भी मैच का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है।

कुछ दशा/महादशा बैटिंग साइड के लिए एंटी होती है।

कुछ दशा/महादशा किसी खास टीम के लिए खराब होती है (शनि/राहु इंडियन क्रिकेट टीम के लिए बहुत अच्छे होते हैं)

चर लग्न

1,4,7, और 10 में रन तेज़ी से आते हैं

जब मैच इन साइन में चलता है।

इस समय हार्ड हिटर प्ले होने पर, वेरी हार्ड हिटिंग प्ले देखने को मिलने की संभावना बढ़ जाती है।

यही बात बॉलर पर भी लागू होती है, अगर फास्ट बॉलर इन खास राशि में बॉलिंग करने आता है, तो विकेट आने की संभावना बढ़ जाएगी। (इन राशियों में स्पिनर समय के खिलाफ होते हैं)

जब मैच के समय फिक्स्ड साइन चलता है जैसे 2,5,8,11 (स्थिर लग्न)

धीमी गति से चलना बताता है।

डिफेंसिव प्लेयर ज़्यादा धीमे होंगे (हालांकि T20 क्रिकेट में, डिफेंसिव प्लेयर्स का इस्तेमाल नहीं होता, यह फॉर्मूला टेस्ट या वन डे इंटरनेशनल क्रिकेट में फिट हो सकता है)

जब खेल डुअल साइन में आता है, तो मिक्स्ड खेल होगा। कुछ ओवर हार्ड हिटिंग होते हैं और कुछ ओवर कम रन वाले होते हैं।

यही फ़ॉर्मूला बैट्समैन पर भी लागू होता है। कभी-कभी हार्ड हिटर्स बैट्समैन डिफेंसिव हो सकता है और कभी-कभी सॉलिड डिफेंसिव बैट्समैन हार्ड हिट कर सकता है।

मरकरी - कैप्टन का इंटेलिजेंस सिग्नल

बुध ग्रह निर्णय लेने, समय, संचार और त्वरित सोच का प्रतीक हो सकता है।

स्मार्ट कप्तानी परिवर्तन

सही DRS निर्णय

सामरिक गेंदबाजी परिवर्तन

स्मार्ट बल्लेबाजी साझेदारियां

”क्या मर्करी टाइमिंग ने बेहतर मैच इंटेलिजेंस को सपोर्ट किया?”

क्रिकेट में सिर्फ ताकत ही नहीं, कभी-कभी समझदारी भी मैच जिता देती है।

छठा भाव - विरोधी को हराना

वैदिक ज्योतिष में, 6th हाउस को अक्सर कॉम्पिटिशन और दुश्मनों पर जीत से जोड़ा जाता है।

टीम ने मजबूत प्रतिद्वंद्वी को हराया

दबाव की स्थितियों को बेहतर तरीके से संभाला

तनाव में बेहतर अनुशासन

कभी-कभी जीत सबसे ताकतवर की नहीं, बल्कि दबाव झेलने वाले की होती है।

मून - मैच का मोमेंटम

चाँद तेज़ी से बदलता है और यह इमोशनल बहाव या मोमेंटम में बदलाव को दिखा सकता है।

अचानक पतन

अप्रत्याशित वापसी

गति में उतार-चढ़ाव

उदाहरण:

टीम A पहली पारी में हावी रहती है लेकिन लक्ष्य का पीछा करते हुए अचानक हार जाती है।

क्रिकेट चाँद की तरह बदलता रहता है – कभी स्थिर नहीं, हमेशा गतिशील रहता है।

कैप्टन राशिफल प्रभाव

कुछ रिसर्चर्स का मानना है कि कैप्टन की टाइमिंग लीडरशिप और मैच के स्वभाव पर असर डाल सकती है।

कप्तान दबाव में
संकट के दौरान नेतृत्व
व्यक्तिगत पारगमन अवधि

एक दिमाग ग्यारह खिलाड़ियों पर असर डाल सकता है।

राहु-शनि आश्चर्य सिद्धांत

राहु-शनि अप्रत्याशितता, अजीब मोड़ और अप्रत्याशित परिणाम बताते हैं।

पसंदीदा टीम हार रही है
अजीब रन-आउट
अप्रत्याशित पतन
मैच में आश्चर्य

क्रिकेट अक्सर अनचाही चीज़ों का इनाम देता है।

संभाव्यता मॉडल

- राहु को हमेशा 'फिक्सर' (गेम की तीसरी पावर, जो गेम के अंदर के पैसे को कंट्रोल करता है) समझें, उसका पैसा 'गेम' से ज़्यादा ज़रूरी है, इसलिए कभी-कभी अजीब क्रिकेट खेला जाएगा। एक क्रिकेट लवर उस समय कह सकता है, "लड़के क्या कर रहे हैं?" उन्हें नहीं पता कि यह 'गेम' का हिस्सा है।

वे खेल को हिला देंगे।

एक 'स्मार्ट पंटर' किताब देख सकता है, इससे पहले कि वे हिलें।

कभी-कभी आप छोटे-मोटे कोलैप्स देखेंगे, कभी-कभी आप लूज़ बॉलिंग देखेंगे। आपको समझना होगा कि यह गेम का हिस्सा है।

जब आप राहु को समझ लेंगे, तो यह आपके लिए बहुत उपयुक्त होगा।

अगर आपको अपने शुरुआती दौर में 50% रिज़ल्ट मिलते हैं, तो आप कह सकते हैं कि यह बहुत अच्छे रिज़ल्ट हैं। बाकी सब ऊपर वाले पर छोड़ दें, वह आपके लिए सबसे अच्छा करेंगे।

पेज 02

जब मेरे 'गुरु' ने यह कहा, जब उन्हें एहसास हुआ कि यह 100% क्रिकेट नहीं है, तो उन्होंने मान लिया, जब मन मान लेता है कि हमें 'इस' तरह का क्रिकेट (खासकर लीग में) देखने के लिए अपने मन को तैयार करना होगा, तो ऑटोमैटिकली आप उस 'क्रिकेट' के हिसाब से अपनी 'बुक' बना लेंगे। जहाँ कभी-कभी 264 रन चेज़ हो जाते हैं लेकिन कभी-कभी 159 रन भी नहीं बन पाते। क्योंकि ग्रहों के पास आपके लिए एक प्लान था, लेकिन इसमें प्लान लग सकता है। वे आपके विश्वास का लेबल चेक कर रहे हैं। आप ग्रहों पर कितना भरोसा करते हैं। यह इस बात पर निर्भर करेगा कि आपको कितनी सफलता मिलेगी और इसमें कितना समय लगेगा।

अध्याय 10

'गुरुओं' की सट्टेबाजों को सलाह

पृष्ठ 01

सेक्शन 1: गेम की कॉस्मिक टाइमिंग

“कुंडली के अनुसार, सही क्षण अलग-अलग चरणों में प्रकट हो सकता है- कभी टॉस के ठीक बाद, कभी मैच की शुरुआत में और कभी-कभी ठीक बीच में।

इसलिए, धैर्य और अनुशासन बहुत ज़रूरी है।

एक ही दिन में बहुत ज़्यादा मुनाफ़ा कमाने की सोच से बाहर निकलना होगा।

बुरे दिन में खेल से दूर रहना और अच्छे दिन का पूरा फायदा उठाना, सफलता की असली कुंजी है।”

सेक्शन 2: लालच पर समझदारी

उन्होंने कहा, “हर मैच में मौका नहीं मिलता और हर पल सही समय नहीं होता।

राशिफल संकेत देता है - आपको बस धैर्य रखने की जरूरत है।

'जल्दी अमीर बनने' की सोच छोड़ो और खेल को समझो।

बुरे दिन में कब रुकना है, यह जानना ही सच्ची समझदारी है।

और अच्छे दिन अवसर का लाभ उठाना ही सच्ची जीत है!"

सट्टेबाज की रणनीति और सट्टेबाज का जाल

50p का जाल: बुकी जानते हैं कि 50% बेट तभी लगाई जाती हैं जब मार्केट रेट 50 पैसे के आस-पास पहुँचता है। इसलिए, बुकी अक्सर पैसे के उस खास पूल को टारगेट करते हैं और सीधा, एकतरफ़ा मैच चलाते हैं... जिससे सट्टेबाज़ों के पास बाहर निकलने या अपना नुकसान कम करने का कोई मौका नहीं बचता।

गोल्डन रूल: हर मैच मत खेलो।

रिस्क असेसमेंट: तब तक बेट न लगाएं जब तक आप साफ तौर पर तय न कर लें: "मैं बिना दर्द महसूस किए कितना हारने को तैयार हूँ?"

माइंडफुलनेस फ़ॉर्मूला (चेकपॉइंट रूल)

गेम को सिस्टमैटिक तरीके से इवैल्यूएट करें:

टी20: हर एक ओवर के बाद

ODI: हर 5 ओवर के बाद

टेस्ट मैच: हर 20 ओवर के बाद

हर चेकपॉइंट पर, खुद से यह एनालिसिस सवाल पूछें:

"क्या यह मौजूदा मुनाफ़ा मुझे मन की शांति देगा?"

अगर हाँ: तो तुरंत अपना प्रॉफ़िट बुक करें।

अगर नहीं: होल्ड करें, फिर से एनालाइज़ करें, और अगले इंटरवल पर फिर से चेक करें।

सट्टेबाजी के सुनहरे सिद्धांत

अल्टीमेट मंत्र: एक रनिंग मैच में, एक पंटर को केवल दो शब्द याद रखने की ज़रूरत होती है:

ENTRY और EXIT.

रोल डिवीज़न: मैच सेट करना फिक्सर का काम है; बुक सेट करना (अपने प्रॉफ़िट/लॉस को बैलेंस करना) पंटर का काम है।

X-Ray विज़न: क्रिकेट में, कभी भी वो मत देखो जो लोगों को दिखता है। सतह के नीचे, गहराई से देखने की कोशिश करो। जिस दिन तुम छिपी हुई चीज़ों को देखने की कला में माहिर हो जाओगे, सफलता बस कोने में होगी।

पेज 02

लगभग पहले 10% मैच छोड़ दें।

आप बस मैच देखें लेकिन बेट न लगाएं। बस ऑब्ज़र्व करें। तब आपको वो चीज़ें दिखेंगी, जो आप बेट लगाते समय नहीं देख पाते। आपको हैरानी होगी कि यह ऑब्ज़र्वेशन आपको क्रिकेट मैचों का एस्ट्रोलाॉजर बनाता है।

तो अपनी बेटिंग डायरी में एक आसान नियम बना लें कि किसी भी लीग या टूर्नामेंट के लगभग पहले 12% मैचों पर बेट न लगाएं।

मान लीजिए IPL में 74 मैच खेले जाते हैं, तो आपको पहले 12% मैच (मतलब 10 मैच) छोड़ने होंगे। 10 मैच के बाद ही बेटिंग शुरू करें।

सेशन न खेलें, लेकिन आपको सेशन की लंबी इनिंग देखनी होगी; आपको लंबी इनिंग के रन का भी अंदाज़ा लगाना होगा।

मैं दोहराता हूं, आप अंदाज़ा लगा सकते हैं कि पिछले मैच में जो भी रन बने थे, इस बार वैसे नहीं होंगे।

या फिर पिछले मैच में इस मैदान पर जो भी रन बने थे, अब वह अलग होगा।

मेन बात यह है कि इस बार रन या तो ज़्यादा होंगे या कम। कम से कम 20 रन का अंतर तो मिल ही जाएगा।

वे 20 रन या तो कम होंगे या ज़्यादा।

आकर्षण का नियम

पेज 03

उन मैचों पर सट्टा लगाने से बचें जो UNIMPORTANT हैं—जहां जीत से कोई खास फर्क नहीं पड़ता।

बारिश से प्रभावित मैचों में बेटिंग न करें।

हमेशा याद रखें कि बुकी की टीम, पक्की टीम या पसंदीदा टीम आपको धोखा दे सकती है। उस टीम पर कभी भरोसा न करें।

पेंटर को केवल मैच देखना होता है।

अगर कोई विकेट गिर जाए तो कोई उत्साह नहीं होना चाहिए।

यही बात बाउंड्री या छक्के पर भी लागू होती है - तटस्थ रहें।

कैच छूटने पर कोई रिएक्शन नहीं होना चाहिए (चाहे आप फील्डिंग टीम को सपोर्ट कर रहे हों, और न ही किसी फेवरेबल एक्टिविटी पर कोई रिएक्शन होना चाहिए)।

आकर्षण का नियम काम करता है।

अगर आप मैच के नतीजों को लेकर टेंशन लेते रहते हैं, तो असल में यह आपकी टीम के हारने का डर या पैसे खोने का डर है। इसका आप पर बुरा असर पड़ता है।

किसी टीम के परफॉर्मेंस को स्वीकार करना सही ऑब्ज़र्वेशन नहीं है।

कृष्ण और अर्जुन का उदाहरण लें:

आपको सिर्फ लड़ना चाहिए; जीत या नतीजों की चाहत या उन पर ध्यान न दें।

जैसे कोई नौकरी ढूँढने वाला बिना किसी उम्मीद के इंटरव्यू दे रहा हो।

जैसे कोई वकील बिना किसी उम्मीद के केस लड़ रहा हो।

जैसे कोई पंटर जिसने अपनी पहली बेट लगा दी है और अब बिना किसी उम्मीद के अपनी दूसरी बेट का इंतज़ार कर रहा है (अपना रिस्क कम करने या अपने EXIT प्लान को पूरा करने के लिए)।

आसान शब्दों में कहें तो मैच में कोई इमोशन न डालें।

अपना काम करो और बिना किसी इमोशन के मैच देखो।

आपको किसी टीम से जुड़ने की ज़रूरत नहीं है।

रिसर्च से पता चलता है कि कोरोना के बाद, जो लोग उस दौरान डरे हुए थे, उन्हीं की जान चली गई।

जब आप डिप्रेस्ड होते हैं, तो आपको स्ट्रेस होता है।

जब आप स्ट्रेस लेते हैं, तो यूनिवर्स आपके लिए नेगेटिव वेब्स भेजेगा।

अध्याय 11

'राहु' द फिक्सर

पृष्ठ 01

राहु द फिक्सर

2026 में फिर से वापस। जब मैंने एक किताब लिखना शुरू किया तो मैंने 'गुरु' से कॉन्टैक्ट किया और वह कोऑपरेट करने के लिए तैयार थे और क्रिकेट 'फिक्सिंग' के बारे में उनके पास जो भी 'अंदर की जानकारी' थी, वह बताने के लिए तैयार थे। मैं आपको उनके शब्दों में दे रहा हूँ। और

आईपीएल में फिक्सिंग के ज़रूरी हिस्से के बारे में उन्होंने जो कुछ भी कहा, उसे आपके सामने रखने की पूरी कोशिश कर रहा हूँ।

1. ICL का खत्म होना और IPL का जन्म

”BCCI की इंडियन क्रिकेट पर दशकों तक मोनोपॉली थी। हर मैच, हर टूर्नामेंट, हर एक पैसा BCCI के ज़रिए जाता था। इसलिए, पहली बार, ICL उस मोनोपॉली को चैलेंज कर रहा था... और BCCI ने ठीक वही किया जो कोई भी मोनोपॉली चैलेंज का सामना करने पर करती है—कॉम्पिटिशन को पूरी तरह खत्म कर देना। BCCI ने एक नियम बनाया कि जो भी प्लेयर ICL में खेलेगा, उस पर लाइफटाइम बैन लगेगा। लाइफटाइम बैन का मतलब था कि वह प्लेयर न तो इंडिया के लिए खेल सकता था और न ही रणजी ट्रॉफी खेल सकता था... उनका करियर पूरी तरह खत्म हो गया था। इस बैन से 64 इंडियन क्रिकेटर बुरी तरह प्रभावित हुए... इसके बाद, BCCI ने ठीक इसी मॉडल को कॉपी करना शुरू कर दिया... और तय किया कि वे अपनी खुद की T20 लीग बनाएंगे... और आखिर में इंडियन प्रीमियर लीग की घोषणा की।”

2. कोच्चि टस्कर्स और ₹70 करोड़ का राजनीतिक घोटाला

”अप्रैल 2010 में, ललित मोदी ने एक ट्वीट किया जिससे पॉलिटिकल बवाल मच गया। उन्होंने कोच्चि टस्कर्स केरल की मालिक कंपनी, रेंडेज़वस स्पोर्ट्स वर्ल्ड (RSW) की ओनरशिप डिटेल्स सबके सामने बताई। यह बात सामने आई कि सुनंदा पुष्कर, जो उस समय के सेंट्रल गवर्नमेंट मिनिस्टर शशि थरूर की पत्नी थीं, के पास RSW में 70 करोड़ की स्वेट इक्विटी थी। स्वेट इक्विटी का मतलब है वो शेयर जो आपको बिना पैसा लगाए, किसी सर्विस के बदले में मिलते हैं। विपक्ष ने पार्लियामेंट में भारी हंगामा किया, और थरूर को इस्तीफा देना पड़ा। वह UPA-2 के पहले मिनिस्टर थे जिन्होंने इस्तीफा दिया।”

3. खिलाड़ियों के काला धन लेने का खुलासा

”2012 में, पहले चेतावनी के संकेत दिखे। डेक्कन चार्जर्स के खिलाड़ी टीपी सुधींद्र एक स्टिंग ऑपरेशन के दौरान फिक्सिंग में शामिल पाए गए, और BCCI ने उन्हें लाइफटाइम बैन कर दिया। पुणे वॉरियर्स के खिलाड़ी मोहनीश मिश्रा भी एक स्टिंग ऑपरेशन में पकड़े गए, जहाँ उन्होंने कैमरे पर कहा कि फ्रेंचाइजी मालिक खिलाड़ियों को ब्लैक मनी में पेमेंट करते हैं।”

4. बदनाम 2013 स्पॉट-फिक्सिंग स्कैंडल

”2013 में, असली स्कैंडल सामने आया। दिल्ली पुलिस ने राजस्थान रॉयल्स के तीन खिलाड़ियों—एस. श्रीसंत, अजीत चंदीला और अंकित चव्हाण को गिरफ्तार किया। आरोप यह था कि इन खिलाड़ियों ने मैच के कुछ खास ओवरों में फिक्सिंग की थी... मतलब उन्होंने कुछ खास

ओवरों में कुछ खास रन दिए ताकि बुकी और सट्टेबाज भारी मुनाफा कमा सकें। इसे स्पॉट-फिक्सिंग कहते हैं। BCCI ने तीनों पर लाइफटाइम बैन लगा दिया।”

पेज 02

5. गुरुनाथ मयप्पन की गिरफ्तारी और सट्टेबाजी

”चेन्नई सुपर किंग्स के टीम प्रिंसिपल गुरुनाथ मयप्पन को भी गिरफ्तार किया गया। उन पर गैर-कानूनी सट्टेबाजी और टीम की गोपनीय जानकारी बुकमेकर्स और बुकीज़ को देने के आरोप थे। गुरुनाथ कौन थे? वह एन. श्रीनिवासन के दामाद थे। और श्रीनिवासन उस समय BCCI के प्रेसिडेंट और साथ ही चेन्नई सुपर किंग्स के मालिक भी थे।”

6. सुप्रीम कोर्ट और चेन्नई और राजस्थान टीमों पर 2 साल का बैन

”जो ऑर्गनाइज़ेशन पूरी लीग को कंट्रोल और चलाता है, उसका एक हेड होता है जो एक खास टीम का मालिक भी होता है। कॉन्फ्लिक्ट ऑफ़ इंटरेस्ट का यह सवाल सुप्रीम कोर्ट तक पहुँचा। एक जज ने साफ़-साफ़, बहुत ज़्यादा कोट किया जाने वाला सवाल पूछा-’BCCI चीफ किसी टीम का मालिक कैसे हो सकता है?’ सुप्रीम कोर्ट ने जांच के लिए जस्टिस आरएम लोढ़ा कमेटी बनाई... कमेटी ने पूरी जांच की... और फैसला सुनाया-चेन्नई सुपर किंग्स पर 2 साल का बैन, और राजस्थान रॉयल्स पर 2 साल का बैन। राजस्थान रॉयल्स के को-ओनर राज कुंद्रा पर भी कई बेटिंग के आरोप लगे थे।”

7. युजवेंद्र चहल को 15वीं मंजिल से लटकाया गया

”एक प्लेयर था जो बहुत नशे में था, मैं उसका नाम नहीं लूंगा... उसने मुझे बस बुलाया, ’यूज़ी इधर आओ’... उसने मुझे पकड़ लिया, तुम्हें पता है, मुझे बाहर ले गया, और बालकनी से लटका दिया। मेरे हाथ उसकी गर्दन के चारों ओर इस तरह थे। अगर मेरी पकड़ ढीली हो जाती, तो हम 15वीं मंज़िल पर होते।”

8. चहल को बांधकर कमरे में बंद कर दिया गया

”एक सेलिब्रेशन के दौरान, चहल के टीममेट्स जेम्स फ्रैंकलिन और एंड्रयू साइमंड्स ने उसे बांध दिया, उसके मुंह पर टेप लगा दिया और उसे एक कमरे में बंद कर दिया। चहल पूरी रात वहीं रहा और सुबह सफाई कर्मचारियों ने उसे बचाया। चहल के अपने शब्दों में-’वे इतने खो गए थे कि उन्होंने मेरे मुंह पर टेप लगा दिया और पार्टी के दौरान मुझे पूरी तरह से भूल गए।’ जब यह बात पब्लिक हुई, तो रवि शास्त्री ने कहा कि ऐसे लोगों पर लाइफटाइम बैन लगाना चाहिए।

फिक्सिंग का उदाहरण !!

आईपीएल 2026

5 मैचों का रिब्यू:

नंबर 1 मैच 39

27 अप्रैल 2026

दिल्ली 75 रन पर ढेर हो गई

आरसीबी 9 विकेट से जीती

नोट: यह दिल्ली के लिए वाकई एक बुरा दिन है (हालांकि राशिफल के अनुसार, दिल्ली को हार जाना चाहिए था)

लेकिन यह वह पिच है जिस पर खेला नहीं जा सकता?

नंबर 2 मैच 44

2 मई 2026

मुंबई 11वें ओवर में 99/2 पर खेल रही थी और फिर ढह गई और सिर्फ 159/7 पर ही बनी।

नोट: आखिरी 9 ओवर में सिर्फ 60 रन बने। चेन्नई 8 विकेट से जीती।

नंबर 3 मैच 45

3 मई 2026

SRH ने 9 ओवर में 105/2 रन बनाए

165 में ढह गया

नोट: हालांकि एस्ट्रोलाजी की टीम कोलकाता है, लेकिन सवाल फिर से उठता है कि क्या यह KKR की ज़बरदस्त बॉलिंग है?

नंबर 4 मैच नंबर 46

3 मई 2026

पंजाब ने लगभग 9 ओवर में 47/5 रन बनाए

तब वीरता उभरती है

163 बनाया

(आखिरी 66 गेंदों में लगभग 110 रन)

नोट: पिछली 5 इनिंग्स में पंजाब ने 4 इनिंग्स में 200 का स्कोर पार किया और 1 बार 198 रन बनाए। यह सेशन प्लेयर्स के लिए प्रॉक्सी नहीं है?

नंबर 5 मैच नंबर 47

LSG ने 11वें ओवर में 143 रन बनाए

और आखिरी 9 ओवर में लगभग 90 रन

नोट: एक क्रिकेट प्रेमी कह सकता है कि 'क्रिकेट एक मजेदार खेल है', लेकिन यह सिर्फ क्रिकेट है?

मैं एक ज्योतिषी हूँ, फिक्सिंग एक्सपर्ट नहीं। मुझे नहीं पता कि गेम के पीछे क्या चल रहा है। अगर आप सच में और जानना चाहते हैं, तो Amazon पर मिस्टर अतुल कुमार की किताबें पढ़ें। यह मैच के इस डिपार्टमेंट में आपकी आँखें खोल देगी।

अध्याय = 12

"शनि, कर्मों का फल देने वाले।"

पृष्ठ 01

ज्योतिष में, शनि या सैटर्न सभी काले काम या 2 नंबर के काम का ग्रह है। लेकिन वह जजमेंटल ग्रह भी है। इसीलिए कुछ लोग आज भी कहते हैं कि 'गलत काम पूरी ईमानदारी से किए जाते हैं' शनि एक सुस्त ग्रह है।

लेकिन यह पैरों का भी कारक है।

पैरों के बिना कुछ नहीं किया जा सकता। खासकर क्रिकेट, इसलिए शनि क्रिकेट पर हावी है।

शनि जब मेहनती लोगों को देखते हैं तो बहुत खुश होते हैं। इसलिए जब युवा क्रिकेटर कड़ी मेहनत करते हैं, तो शनि उन्हें क्रिकेट में मौका देते हैं। शनि का आसान नियम है, 'कर्म का फल दूंगा'

2 एजेंट, राहु और केतु द्वारा दिया गया कर्म फल।

राहु का दबदबा ग्लैमर, सोशल मीडिया, IPL में ग्लैमर और क्रिकेट में फिक्सिंग पर भी है।

शनि गुप्त का ग्रह है

सभी फिक्सिंग या सेटिंग गुप्ता हैं

हम केवल अनुमान लगा सकते हैं।

इसके पीछे का असली सच कोई नहीं जानता।

शनि किसी भी तरह की बेटिंग का मुख्य ग्रह है।

अगर किसी व्यक्ति की कुंडली में 5th, 8th, 10th, 11th घर में शनि का मज़बूत कनेक्शन है, तो उसे लॉटरी या बेटिंग से फ़ायदा होता है (कुछ शर्तें भी पूरी होनी चाहिए जैसे शुक्र, बुध की स्थिति और शनि से लिंक)

शनि के नज़रिए से, कुछ भी गलत नहीं है।

कुछ भी पाप या पुण्य नहीं है

अगर आप पिछले जन्म में या इस जन्म में दान करते हैं, तो वह आपको कम से कम 8 गुना ज़्यादा देगा। इसीलिए अमीर लोग ज़्यादा से ज़्यादा दान करते हैं, क्योंकि उन्हें कम से कम 8 गुना ज़्यादा वापस मिलता है।

कॉसमॉस में ग्रहों के 2 मुख्य ग्रुप हैं।

सूर्य, चंद्रमा, बृहस्पति और बुध एक ही समूह में

शनि शुक्र

राहु और केतु (नोड्स) दूसरे ग्रुप में हैं।

क्रिकेट में सारा ग्लैमर, खासकर T20 क्रिकेट लीग में, शुक्र के कारण है।

राहु उन्हें फेमस बनाता है और केतु उन्हें न्यूट्रल इमोशंस देता है। 'और पैसा आया तो मोटा, ना आया तो मोटा'

खिलाड़ी भी ज़्यादा से ज़्यादा दान करते हैं, केतु उन्हें फिर से ज़्यादा से ज़्यादा देता है। इसीलिए मैं सभी क्रिकेट पंटरस को सलाह देता हूँ कि जितना हो सके उतना दान करें। वह पैसा आपको कम से कम 8 गुना होकर वापस मिलेगा।

मैं आपको एक FIX फ़ॉर्मूला दे रहा हूँ, कुछ सफल पंटरस और बुकीज़ ने ऐसा किया और वे आज फ़ाइनेंशियली फ़्री हैं। अगर आप इसे फ़ॉलो करते हैं, तो आप भी जादू देख सकते हैं।

ब्रह्मांड का सरल नियम

'जो दोगे, वो मिलेगा'

हमें यूनिवर्स से क्या चाहिए?

बेशक हमारी इच्छाएं पूरी होनी चाहिए।

सभी इच्छाओं के लिए पैसे की ज़रूरत होती है।

जब आपको पैसे की ज़रूरत होती है तो आप क्या कीमत चुकाने को तैयार रहते हैं? क्योंकि दुनिया में कुछ भी मुफ्त नहीं है। अगर आपको पैसे की ज़रूरत है तो आपको पहले पैसे देने होंगे।

वेदों में कहा गया है कि अगर आप दान करते हैं तो यह कम से कम 8 गुना वापस मिलता है।

सनातन धर्म में दसवंद सिस्टम को फॉलो किया जाता है। दक्षिण भारत में, कई मंदिरों को 10%

'पार्टनरशिप' या बिज़नेस में 10% का प्रॉफ़िट मिल रहा है और भक्त हर महीने, हर तीन महीने या हर साल दान करते हैं।

तिरुपति मंदिरों को हर साल करोड़ों मिलते हैं, यह भक्तों के दान का एक उदाहरण है।

बेशक यह एक कॉस्मिक साइंस है, इसीलिए वे हर साल ज़्यादा से ज़्यादा दे रहे हैं और उन्हें पिछली बार दिए गए पैसे से ज़्यादा वापस मिल रहा है, वगैरह।

बेटिंग या गैंबलिंग GUPY इनकम है। अगर आप यह फ़ॉर्मूला अपनाते हैं और अपना 10% कहीं डोनेट करते हैं (अजनबी) तो यह सबसे अच्छा ऑप्शन है। क्योंकि जब आप किसी अनजान को देते हैं तो आपका WHO नहीं बढ़ेगा और यह काम करता है।

मेरी रिसर्च में, अगर आप इस नियम को कम से कम 3 महीने तक फॉलो करते हैं (कॉस्मिक एनर्जी के पास प्लान बनाने के लिए काफी समय होता है)

नतीजे आएंगे

पेज 02

शनि सूर्य का पुत्र है।

सूर्य अनुशासन का ग्रह है

इसलिए सूर्य का अनुमान लगाया जा सकता है।

सूरज हमेशा एक खास समय पर पूरब में उगता है और सूरज हमेशा एक खास समय और जगह पर डूबता है।

लेकिन शनि सूर्य से बिल्कुल विपरीत है।

शनि जुए का ग्रह है

सन को जुआ से नफ़रत है

शनि सम्मान और भय भी देता है

सूरज से। इसलिए पंटरस को किसी भी महीने के रवि की इन कुछ तारीखों 1, 10, 19, 28 तारीखों में बेट लगाने से बचना चाहिए।

पूरे रविवार (स्पेशली डे गेम) सूर्यास्त के बाद शनि हावी रहेगा।

ये पंटर के लिए मददगार होंगे

शनि को लालच से भी नफ़रत है

उनका आसान सा नियम, मैं तुम्हें देने आया हूँ, अगर तुम अपने लालच पर काबू नहीं रख सकते, तो मैं तुम्हें हरा दूँगा (नुकसान झेलने के लिए तैयार)

शनि को अहंकार से नफ़रत है

अगर कोई पंटर सोचता है कि 'वह अपनी काबिलियत या बेटिंग की अपनी कला से मैच जीतता है' तो वे हारने के लिए तैयार हैं।

शनि को उत्सव से नफ़रत है

अगर पंटर जीत की खुशी मनाएगा, तो शनि अगले मैच में सज़ा देगा।

आप अपने दोस्त और रिश्तेदार को भी यह नहीं बताते कि आपका मेन प्रोफेशन क्या है या आपने बेटिंग लाइन में काम किया है।

शनि को मौन पसंद है

शनि के सरल नियम,

'मैं आपकी सभी ज़रूरतें पूरी करूँगा।

अगर आपकी ज़रूरत 5 लाख या 5 करोड़ के घर की है, तो वह पूरा करेगा, लेकिन अगर आपकी DESIRE बढ़ेगी, तो वह फिर से शॉक देगा।

शनि बहुत शुद्ध ग्रह है

लोग शनि से डरते हैं लेकिन उनका आसान नियम, मैं सही ठहराऊँगा,

यह बुरी बात नहीं है

शनि के आने पर इंसान पवित्र हो जाता है

राहु शनि का एजेंट है

न्यूमरोलॉजी में शनि का नंबर 8 और राहु का नंबर 4 है

ज़्यादातर क्रिकेट इवेंट्स इन्हीं दो नंबरों से कंट्रोल होते हैं।

राहु अंक 4 का प्रतिनिधित्व करता है

जब ipl शुरू हुआ, तो मैच का समय शाम 4 बजे और रात 8 बजे था (शनि और राहु दोनों का प्रतिनिधित्व करते हैं)

लेकिन कुछ सालों बाद, समय बदलकर 15:30 और 19:30 pm हो जाता है।

जब हम 19 30 को तोड़ते हैं, तो $1+9+3+0=13$

मतलब 4

राहु अनिश्चित ग्रह है

जब आप कोई मैच स्कोर देखते हैं जो नंबर 4 जैसा दिखता है या दिखाता है, तो इसका मतलब है कि ज्यादातर मैच अनप्रेडिक्टेबल होते हैं या यह FIXERS ज़ोन है।

मान लीजिए जब आप स्कोर 210 रन देखते हैं

चेज़ टारगेट 211 है

$2+1+1=4$

इसका मतलब है कि राहु वहाँ है

अनिश्चित चीज़ें होंगी

किसी ने भी यह अनुमान नहीं लगाया था कि यह स्कोर चेज़ होगा या नहीं

मुख्य महत्वपूर्ण बात यह समझनी चाहिए कि फिक्सर की चलेगी

अगर उनकी सिंडिकेट किताबों का पीछा करने दिया जाएगा, तो उसका पीछा किया जाएगा

लेकिन अगर SYNDICATE ज़्यादा ढीला होगा तो उसे पीछा करने की इजाज़त नहीं होगी

औसत का नियम हमेशा मायने रखता है

अगर आपको यह 50% से ज़्यादा मिला, तो इसका मतलब है कि यह काम करता है।

हालांकि अभी और रिसर्च करनी है, और भी जानकारी सामने आएगी

फिक्सिंग उनका काम है, पंटर को अपना काम समझना चाहिए

सर्वशक्तिमान उसे प्रकाश दिखाएगा

आपको उस प्रकाश को समझना होगा

आप सड़क पर जाएं, सिग्नल पाएं, बस उन निर्देशों का पालन करें

कोई भी आपका हाथ पकड़कर आपको आपकी मंज़िल तक नहीं ले जा सकता

ज्योतिष भी ऐसा ही है

आपका ज्योतिषी आपको दिशा बताएगा और आपको यह समझना होगा

फिक्सिंग की दुनिया में, आपको समझना होगा और उसी के हिसाब से अपनी शर्त लगानी होगी।

अगर आप अपनी किस्मत पर भरोसा करते हैं और अपने ज्योतिषी को मानते हैं, तो ऊपर वाले के पास आपके लिए एक प्लान है।

आप बस नियमों का पालन करें (बेटिंग और आध्यात्मिक दोनों)

आप खास हैं, इसीलिए आप यह पढ़ने के लिए यहां हैं।

यह किताब बस थोड़ा सा ज्ञान शेयर करने के लिए है। मुझे इस यूनिवर्स के बारे में बहुत कम रहस्य पता है।

लेकिन अगर कृपा हम पर आती है, तो हम आने वाली किताब में और भी सच्चाई का पता लगाते रहेंगे।

शनि हमें सच्चाई का खुलासा करने में मदद करेंगे

अध्याय 13

‘कुछ भी संयोग नहीं है’

पृष्ठ 01

आपका बेटिंग लाइन में आना कोई एक्सीडेंट नहीं है; इसमें कोई इत्तेफ़ाक नहीं होता। यह सब एक बड़े प्लान का हिस्सा है।

अब, चुनाव पूरी तरह से आपका है:

क्या आप इस रास्ते पर खुशी से चलेंगे, या दुख से भरे हुए?

क्या आप पहले खेल के नियम सीखेंगे, या बिना जानकारी के आँख बंद करके खेलेंगे?

सोचिए कि आपके पास सिर्फ़ 4% बैटरी (आग) बची है। यह आप पर है कि आप इस बची हुई एनर्जी को अतीत के बारे में सोचकर और भविष्य की चिंता करके बर्बाद करते हैं, या अपनी बैटरी को पूरी तरह चार्ज रखने के लिए पूरी तरह से वर्तमान में जीते हैं।

पूरी तरह चार्ज बैटरी के साथ, आप अपने भीतर के 72% जल तत्व का उपयोग कर सकते हैं - जो आपके सभी सपनों को साकार करने और पूरा करने के लिए आवश्यक अंतिम शक्ति है।

प्रीलिब (अपनी वास्तविकता को पहले से जीना)

कुदरत आपको कोई चीज़ सिर्फ़ एक बार देती है, चाहे वह मैच में जीती हुई रकम हो या आपकी सपनों की कार। इसे कुदरत, भगवान, या कोई ऊपर वाली शक्ति कहिए—यह आपकी इच्छा पूरी करेगी, लेकिन इसके साथ एक सख्त शर्त है: आप इसे या तो असलियत में महसूस कर सकते हैं, या

अपनी कल्पना में। अपने विचारों में इसे पहले से महसूस करने के इस जाल को हम "प्रीलिव" कहते हैं।

मान लीजिए आप चाहते हैं कि कोई खास टीम जीते। सही तरीका है कि आप इच्छा करें और उसे जाने दें। लेकिन, अगर आप जीत की गहरी कल्पना करने लगें, टीम को जीतते हुए देखें, और ऐसा होने से पहले उस पल को अपने दिमाग में जीने लगें, तो वह टीम असल में नहीं जीतेगी।

हम अक्सर कहते हैं, "किसी की बुरी नज़र (नज़र) ने इसे बर्बाद कर दिया।" सच तो यह है कि यह किसी और की बुरी नज़र नहीं है—हम अपने नतीजों को "पहले से जीकर" उन्हें कोसते हैं। सफल होने के लिए, हमें कुदरत के इस नियम को समझना होगा। अगर आप चाहते हैं कि कोई इच्छा पूरी हो, तो उसे एक बार बोलें और फिर उसे पूरी तरह भूल जाएं। अगर आप दिन-रात सपने के बारे में सोचते रहेंगे, तो वह असल दुनिया में कभी पूरा नहीं होगा।

अभिव्यक्ति

जब आप भगवान से कुछ मांगते हैं, तो एक बार मांगें और जाने दें। बार-बार मांगना इस बात का संकेत है कि आपमें विश्वास की कमी है।

इसे ऑनलाइन शॉपिंग की तरह समझें:

आप एक बार ऑर्डर देते हैं और उसे छोड़ देते हैं।

अगर आप पिज़्ज़ा ऑर्डर करते हैं, तो आप हर दो मिनट में रेस्टोरेंट को फ़ोन करके यह नहीं पूछते कि, "क्या यह तैयार है?", "क्या आपको पक्का पता है कि यह आ रहा है?", या "क्या होगा अगर आप इसे गलत पते पर डिलीवर कर दें?"

प्रकृति या भगवान को अपने पिता की तरह मानें। जब हम बच्चे थे तो अपने पिता से कुछ मांगते थे, तो हम उसे बार-बार नहीं दोहराते थे क्योंकि हमारे मन में इस बात को लेकर कोई शक नहीं होता था कि हमें वह मिलेगा या नहीं।

अगर आपके मन में शक है, तो यूनिवर्सल एनर्जी आपके लिए काम नहीं करेगी। एनर्जी सिर्फ़ साफ़, पक्के हुक्म समझती है। अगर आपके मन में यह उलझन है कि आपकी इच्छा पूरी होगी या नहीं, तो यह बस नहीं होगी।

कृपा (दिव्य अनुग्रह)

सट्टेबाजी असल में वायु तत्व से जुड़ी हुई है।

पैसा तभी बहेगा जब हवा चलेगी।

लेकिन याद रखें, कोई भी इंसान हवा को कंट्रोल नहीं कर सकता।

क्योंकि आप इसे कंट्रोल नहीं कर सकते, इसलिए आपको आशीर्वाद (भगवान की कृपा) की बहुत ज़रूरत है। जब भी आप अपने बड़ों से मिलें, तो आशीर्वाद लेने के लिए उनके पैर ज़रूर छुएं। यह

सिर्फ एक रस्म नहीं है; यह पूरी तरह से साइंस है। जैसे ही आप विनम्रता से झुकते हैं, उनकी पॉज़िटिव एनर्जी सीधे आप में आने लगती है।

प्राणायाम (सांस कंट्रोल) करने से आपके अंदर वायु तत्व को रेगुलेट करने में भी मदद मिलती है, जिससे आपको बहुत ज़्यादा मेंटल एनर्जी मिलती है। अगर आप अपने आस-पास की 72% कॉस्मिक एनर्जी को एब्जॉर्ब करना चाहते हैं, तो आपको आशीर्वाद मांगना और कमाना होगा।

पेज 02

पितृ स्थान (पूर्वजों का क्षेत्र)

हमारे जो पूर्वज गुज़र चुके हैं, उनमें हमें आशीर्वाद देने की बहुत ताकत होती है। यह सुरक्षा कवच कम से कम तीन पीढ़ियों तक, या उससे भी ज़्यादा पुराना है।

उन्हें सम्मान देने और इस एनर्जी का फ़ायदा उठाने के लिए, आपको उनकी तस्वीरें अपने घर के साउथ-वेस्ट एरिया में लगानी चाहिए।

अगर फ़ोटोग्राफ़ खुद पुराना या थोड़ा खराब है, तो भी यह पूरी तरह ठीक है—लेकिन यह पक्का कर लें कि फ्रेम एकदम नया हो।

याद रखें, आपके पूर्वज आपसे अलग नहीं हैं; वे आपके DNA में जीवित रहते हैं।

वे भगवान के सीधे एजेंट के तौर पर काम करते हैं।

भगवान से कुछ भी मांगने से पहले, आपको सबसे पहले अपने पितरों से अपनी रिक्वेस्ट करनी चाहिए। वे बहुत ज़्यादा पूजा-पाठ या मुश्किल पूजा की मांग नहीं करते। बस उनके लिए सम्मान के साथ जगह बनाएं, उन्हें ठीक से रखें, और बाकी सब वे खुद कर लेंगे।

‘इष्ट’ न होने का मतलब है ‘भ्रष्ट’ (बिना चुने हुए देवता के बर्बाद)

यह समझने के लिए कि भगवान कैसे काम करते हैं, एक मॉडर्न सरकार को देखें: नरेंद्र मोदी भारत के प्रधानमंत्री हैं, लेकिन वे हर सेक्टर को अकेले नहीं चलाते; हर डिपार्टमेंट का अपना एक खास मंत्री होता है।

आध्यात्मिक दुनिया भी ठीक इसी सिस्टम के तहत काम करती है:

सर्वोच्च ईश्वर एक है, लेकिन हर व्यक्ति का एक खास ‘इष्ट देवता’ (एक निजी मार्गदर्शक देवता) होता है।

किसी व्यक्ति के लिए उनके इष्ट भगवान शिव हो सकते हैं; किसी अन्य के लिए, यह देवी दुर्गा हो सकती है; जबकि कोई अन्य भगवान गणेश से जुड़ा हो सकता है।

आपको पता लगाना चाहिए कि आपके इष्ट देवता कौन हैं और उनकी मूर्ति या तस्वीर अपने घर के दक्षिण-पश्चिम हिस्से में, अपने पितृ स्थान के ठीक बगल में रखें।

अपने इष्ट से जुड़े बिना, आपकी आध्यात्मिक और भौतिक नींव अस्थिर ('भ्रष्ट') रहती है। अपनी जन्म कुंडली के आधार पर यह पता लगाने के लिए कि आपका इष्ट देवता कौन है, आपको किसी एक्सपर्ट ज्योतिषी से सलाह लेनी चाहिए।

पेज 03

पौधों और ब्रह्मांडीय ऊर्जा को समझना

पूरा ब्रह्मांड शुद्ध ऊर्जा के अलावा कुछ नहीं है। हमारा शरीर भी इसी ऊर्जा का एक रूप है।

जब हमारी एनर्जी कम हो जाती है, तो हम बीमार पड़ जाते हैं। जब एनर्जी शरीर से पूरी तरह निकल जाती है, तो हम मर जाते हैं। अगर हम इस एनर्जी का सही इस्तेमाल करने और उसे सही दिशा देने की कला में माहिर हो जाएं, तो हम अपनी हर इच्छा पूरी कर सकते हैं।

प्राण वायु और शनि पर नियंत्रण

भगवान शनि वायु तत्व के शासक ग्रह हैं।

इस शक्ति का उपयोग करने के लिए, हमें बस अपने प्राण वायु (जीवन-शक्ति श्वास) का निरीक्षण करना होगा - श्वास को शरीर में प्रवेश करते समय देखना, और छोड़ते समय भी देखना होगा।

मन का भटकाव: जब कोई इंसान पहली बार अपनी सांस पर ध्यान देना शुरू करता है, तो उसे बहुत ज़्यादा प्रैक्टिस की ज़रूरत होती है। आपका मन अपने आप आपका ध्यान भटकाने की कोशिश करेगा। यह आपकी कोशिशों का मज़ाक उड़ाएगा और कहेगा, "तुम किस बेकार काम में अपना समय बर्बाद कर रहे हो?"

बदलाव: लेकिन, जब आप मन की बकवास सुनने से मना कर देते हैं और उससे दूर रहते हैं, तो मन आखिरकार हार मान लेता है और आपके खिलाफ काम करने के बजाय आपके लिए काम करना शुरू कर देता है।

एक बार जब आप गहरी अंदरूनी जागरूकता की इस हालत में माहिर हो जाते हैं, तो आपको किसी ज्योतिषी या मैच-टिपर पर निर्भर रहने की ज़रूरत नहीं होगी। आपका बढ़ा हुआ इंट्यूशन आपको एकदम साफ़ जानकारी देगा, और आपको अपने आप पता चल जाएगा कि कौन सी टीम जीतने वाली है।

पेज 04

ग्रहों की मूल प्रकृति

सूर्य

रोशनी देता है: सूरज जीवन में सबसे ज़्यादा रोशनी देता है।

अगर आपके रास्ते में काफ़ी रोशनी है, तो आप अपनी यात्रा को आसानी से तय कर सकते हैं और आगे बढ़ सकते हैं।

चंद्रमा

इमोशन देता है: ज़िंदगी में इमोशनल बैलेंस बहुत ज़रूरी है।

किसी से बहुत ज़्यादा लगाव आखिरकार गहरे दर्द की जड़ बन जाता है। इसके उलट, किसी से बहुत ज़्यादा नफ़रत सिर्फ़ बढ़ती है।

मंगल

एनर्जी देता है: मंगल आपकी शारीरिक और ज़रूरी जीवन शक्ति को दिखाता है।

जब आपका एनर्जी लेवल गिरता है, तो आप बीमार पड़ जाते हैं। जिस पल यह एनर्जी शरीर से पूरी तरह निकल जाती है, मौत हो जाती है।

बृहस्पति (गुरु)

बुद्धि देता है: बुद्धि के बिना, कोई भी इंसान ज़िंदगी में आने वाली समस्याओं को संभाल या हल नहीं कर सकता।

बेसिक ज्ञान तो सीखने से मिल सकता है, लेकिन सच्चा ज्ञान तो सिर्फ़ भगवान की कृपा से ही मिलता है।

बुध

कैलकुलेशन देता है: एनालिटिकल स्किल्स और कैलकुलेशन की ज़रूरत ज़िंदगी के हर एक पहलू में होती है-चाहे आप ग्रॉसरी शॉपिंग के लिए बाहर जा रहे हों या कोई बड़ा बिज़नेस चला रहे हों।

शनि

**ज़रूरतें पूरी करता है: शनि आपके जीवन की सभी ज़रूरी ज़रूरतें पूरी करने का वादा करता है।
खाना (रोटी) इंसान की पहली बुनियादी ज़रूरत है**

अगर आप कड़ी मेहनत करते हैं, तो शनि यह पक्का करते हैं कि यह बेसिक ज़रूरत हमेशा पूरी हो।

शुक्र

आराम देता है: शुक्र आपके जीवन में विलासिता लाता है।

अगर आप ज़मीन पर आराम से नहीं बैठ सकते, तो वीनस आपको एक बेसिक कुर्सी देगा। अगर एक स्टैंडर्ड कुर्सी काफ़ी नहीं है, तो वीनस इसे एक लगज़री घूमने वाली कुर्सी बना देता है। स्टाइल, लगज़री और आराम के सभी रूप पूरे होते हैं।

प्रोफेशनल रोल के लिए ग्रहों का मेल

द बुकी (बृहस्पति)

अगर बृहस्पति बहुत ज़्यादा मज़बूत हो और जन्म कुंडली इजाज़त दे, तो व्यक्ति बुकी बन जाता है।

भले ही ऐसे बुकीज़ को भारी फ़ाइनेंशियल नुकसान हो, वे बहुत उसूलों वाले होते हैं और हमेशा अपने पेमेंट समय पर करते हैं।

टिपर (शुक्र + बुध)

जब शुक्र 5th या 8th हाउस के साथ मज़बूत कनेक्शन बनाता है, और साथ ही बुध के साथ भी जुड़ा होता है, तो व्यक्ति टिपर बन जाता है।

यह खास कॉम्बिनेशन उन्हें बहुत ज़्यादा, बहुत ज़्यादा विकसित इंट्यूशन पावर देता है

आपके डोमिनेंट प्लैनेट के आधार पर पंटर स्टाइल

द मर्करी पंटर (द स्मार्ट ट्रेडर)

जब जन्म कुंडली में बुध बेटिंग के पक्ष में होता है, तो व्यक्ति एक प्रोफेशनल ट्रेडर की तरह खेलता है।

वे सिर्फ एक बेट पर नहीं बैठते; वे एक ही मैच में कई बार एंट्री और एग्जिट करते हैं, और सबसेसफली एक बैलेंस्ड बुक (बुक सेट) बनाते हैं।

नुकसान की हालत में भी, वे अपना नुकसान जल्दी कम करते हैं, दोनों तरफ से सुरक्षित रहते हैं, और मार्केट से सुरक्षित बाहर निकल जाते हैं।

द मून पंटर (द इंट्यूटिव प्लेयर)

अगर कुंडली में चंद्रमा बेटिंग की इजाज़त देता है, और व्यक्ति अपनी भावनाओं पर काबू पा लेता है, तो उसे इस बात का पक्का अंदाज़ा हो जाता है कि आज किस टीम का दिन है।

क्योंकि चंद्रमा सबसे तेज़ चलने वाला ग्रह है, इसलिए इसके असर में अपनी भावनाओं को कंट्रोल करने से बहुत ज़्यादा धन मिल सकता है।

सैटर्न पंटर (जैकपॉट किंग)

अगर शनि की कृपा हो, तो पंटर जैकपॉट मैच जीतने में माहिर हो जाता है।

शनि कुदरती तौर पर जुए के लिए एक मुख्य ग्रह है, और ये लोग कम, अंडरडॉग मार्केट रेट (घोड़ा मैच) पर दांव लगाकर सबसे अच्छा करते हैं।

मार्स पंटर (आक्रामक खिलाड़ी)

जब मंगल बेटिंग अलाइनमेंट को चलाता है, तो पंटर बहुत ज़्यादा अग्रेसन के साथ खेलता है। वे ज़्यादातर एकतरफ़ा, सीधा खेलना पसंद करते हैं। क्योंकि उन पर एक खास कृपा होती है, इसलिए जब उनका अंदाज़ा गलत भी हो जाता है, तो वे किसी तरह सेफ़ लाइव एंट्री टूट लेते हैं, साफ़-साफ़ बाहर निकल जाते हैं, और बच निकलते हैं।

नोट: फिजिकल रनिंग मंगल और शनि दोनों को एक साथ एक्टिवेट और मजबूत करती है।

द सन पंटर (द डिसिप्लिन्ड इन्वेस्टर)

जब सन बेटिंग की इजाज़त देता है, तो ये लोग आम तौर पर अपनी पसंदीदा टीम को सपोर्ट करना पसंद करते हैं।

सोलर एनर्जी उन्हें बहुत अच्छा इंट्यूशन देती है, लेकिन उनकी सबसे बड़ी कमी कभी-कभी ओवरकॉन्फिडेंस है, जिससे नुकसान हो सकता है। हालांकि, वे हर मैच बिना सोचे-समझे नहीं खेलते; जब वे खेलते भी हैं, तो वे शायद ही कभी प्रॉफिट कमाए बिना जाते हैं।

राहु प्रभाव (जोखिम लेने वाला)

राहु असल में शनि के गुणों को दिखाता है, लेकिन थोड़े बदलाव के साथ।

पेज 05

जहां शनि शुरू से ही कमज़ोर टीम को सपोर्ट करना पसंद करता है, वहीं राहु पंटर को ऐसी टीम को सपोर्ट करने के लिए उकसाता है जो लाइव चल रहे मैच के दौरान कमज़ोर दिखने लगती है।

केतु प्रभाव (छिपा हुआ दूरदर्शी)

केतु आम तौर पर मंगल के गुणों को दिखाता है।

उनके तेज़ इंट्यूशन और "अंधेरे में देखने" (छिपे हुए नतीजों को पहचानने) की जन्मजात क्षमता के कारण, वे जिन टीमों को चुनते हैं, वे ज़्यादातर समय जीत जाती हैं।

उनकी बस एक ही बड़ी कमी है, कभी-कभी उनमें कॉन्फिडेंस की कमी होती है; वे अक्सर अपनी जीती हुई बेट्स को समय से पहले काट देते हैं या घबराकर छोड़ देते हैं, और बाद में पछताते हैं और बुरा महसूस करते हैं।

महत्वपूर्ण नोट

हर इंसान की जन्म कुंडली (Horoscope) में कम से कम एक नीच ग्रह या कुछ परेशान करने वाले ग्रह तत्व होते हैं। ये वो कॉस्मिक रुकावटें हैं जो ज़िंदगी को आसानी से चलने से रोकती हैं।

जब हमारा शरीर बीमार पड़ता है, तो हम तुरंत इलाज के लिए डॉक्टर के पास जाते हैं। ठीक उसी तरह, जब समय मुश्किल हो और ज़िंदगी अटकी हुई लगे, तो किसी एक्सपर्ट एस्ट्रोलॉजर से सलाह लेनी चाहिए। यह पहचानकर कि कौन सा खास ग्रह परेशानी पैदा कर रहा है, आप रास्ता साफ करने के लिए सही उपाय कर सकते हैं।

अध्याय 14

'गुप्ता' का महत्व

पृष्ठ 01

हम असल में उन देवताओं को चकमा दे सकते हैं या उन्हें "धोखा" दे सकते हैं जो हमारे ग्रहों और पिछले कर्मों का फल देते हैं। हाँ, आपने सही सुना-हम उन्हें धोखा दे सकते हैं।

इसे एक ऐसे खेल की तरह समझें जो बड़े लोग छोटे बच्चों के साथ खेलते हैं:
एक बड़ा बच्चा एक चॉकलेट या खिलौना देता है।

जैसे ही बच्चा उसे पकड़ने के लिए अपना हाथ आगे बढ़ाता है, बड़ा अपना हाथ पीछे खींच लेता है।

बच्चा रोने का नाटक करके रिएक्ट करता है, जिससे बड़े को मज़ा आता है।

बड़े ने फिर से अपना हाथ बढ़ाया, एक बार फिर वापस खींच लिया, और बच्चा फिर से रोने लगा।

यह मज़ाकिया चिढ़ाना तब तक चलता रहता है जब तक या तो बड़ा थक नहीं जाता, बोर नहीं हो जाता, या बच्चा बेकाबू होकर रोने नहीं लगता।

अब, एक बिल्कुल अलग बच्चे की कल्पना कीजिए - जो बिल्कुल भी प्रतिक्रिया नहीं दिखाता है।

यह बच्चा खिलौना दिखाए जाने पर ज़ीरो एक्साइटमेंट दिखाता है और जब उसे खींच लिया जाता है तो कोई रिएक्ट नहीं करता।

आखिरकार, बड़े लोग खेल से थक जाते हैं और खुद ही खिलौना दे देते हैं।

वे बच्चे से रिएक्शन पाने के लिए उसे और खिलौने भी दे सकते हैं, जब तक कि या तो बच्चा आखिरकार मान न जाए या बड़ा पूरी तरह हार न मान ले।

ठीक यही लॉजिक इस बात पर भी लागू होता है कि देवता हमारे कर्मों का फल (कर्म फल) कैसे देते हैं।

जल्दी जश्न मनाने का खतरा

जब भी आप समय से पहले जश्न मनाते हैं, तो आप असफलता को आमंत्रित करते हैं।

जब भी आप कोई मैच जीतते हैं, पार्टी करते हैं, और जश्न मनाते हैं—चाहे दोस्तों के साथ या बिल्कुल अकेले—भगवान, प्रकृति, या हायर पावर आपके लिए दुख भेजने की तैयारी करते हैं।

इसे इस फाइनेंशियल उदाहरण से देखें:

सोचिए आप अपने किसी दोस्त से फाइनेंशियल लोन लेते हैं।

आप कुछ किश्तें चुकाते हैं, लेकिन कर्ज चुकाने से पहले ही आप और पैसे उधार ले लेते हैं।

अब, आप खुद को एक लगातार चलने वाले चक्कर में फंसा हुआ पाते हैं, जिसमें आपको लगातार प्रिंसिपल इंस्टॉलमेंट और भारी इंटरेस्ट देना पड़ता है।

यह ठीक वैसा ही एनर्जेटिक ट्रांज़ैक्शन है जो तब होता है जब आप जीत का बहुत ज़्यादा जश्न मनाते हैं। बहुत ज़्यादा एक्साइटमेंट में रिएक्ट करने से, आप नेचर के उतार-चढ़ाव में फंस जाते हैं।

इस चक्र को तोड़ने और खेल को जीतने के लिए, आपको अलग और तटस्थ रहना होगा - बिल्कुल बेफिक्र बच्चे की तरह।

पेज 02

सफलता के लिए अंतिम कदम: दान (सीक्रेट चैरिटी)

सफलता की गारंटी के लिए आपको जो आखिरी स्टेप पूरा करना होगा, वह है दान।

यह ब्रह्मांड के सबसे गुप्त नियमों में से एक है।

बहुत अमीर लोग इसे पूरी ईमानदारी से अपनाते हैं, लेकिन आम आदमी इसकी ताकत से पूरी तरह अनजान रहता है।

गुप्त दान की शक्ति: आपका दान पूरी तरह से छिपा हुआ और सीक्रेट होना चाहिए। खुला या पब्लिक किया गया दान खतरनाक होता है क्योंकि यह आपके अहंकार को बढ़ाता है, जो आध्यात्मिक लाभ को खत्म कर देता है।

दसवंद का वैदिक नियम: पुराने वेदों में दसवंद का जिक्र है—अपनी कमाई का 10% दान करने की प्रथा। जब आप चुपचाप 10% दान करते हैं, तो ब्रह्मांड आपको उस रकम का 8 गुना वापस लौटाता है। यह खास नियम आपको बेटींग के क्षेत्र में बहुत सफल बनाएगा।

एडवांस्ड नियम: कुल जीत से दान करें, नेट प्रॉफ़िट से नहीं

बहुत ज़्यादा प्रैक्टिकल रिसर्च के आधार पर, मैं और भी शानदार नतीजों के लिए इस नियम को एक कदम और आगे ले जाने की सलाह देता हूँ: अपना 10% अपने नेट प्रॉफ़िट से कैलकुलेट न करें; इसे सीधे अपनी आने वाली जीती हुई रकम से कैलकुलेट करें।

आइए कुछ उदाहरणों से यह साफ़ तौर पर समझते हैं कि यह कैसे काम करता है:

उदाहरण 1:

आज: आप 10,000 हार गए।

एक्शन: आपको कुछ भी डोनेट करने की ज़रूरत नहीं है।

अगला मैच: आप 10,000 जीतेंगे।

एक्शन: आपको तुरंत 1,000 (जीत का 10,000 का 10%) डोनेट करना होगा।

नोट: भले ही आपका मैथमेटिकल नेट प्रॉफ़िट टेक्निकली ज़ीरो है (क्योंकि आपने 10k गंवाए और 10k जीते), आपने यूनिवर्स से पक्का वादा किया है कि आप आने वाली किसी भी रकम का 10% डोनेट करेंगे, चाहे पिछले नुकसान कुछ भी हों।

उदाहरण 2:

मैच 3: आप 5,000 हार गए।

मैच 4: आप 20,000 जीतेंगे।

एक्शन: आपको 2,000 (जीत 20,000 का 10%) डोनेट करना होगा, पिछले 5,000 के नुकसान को पूरी तरह से इग्नोर करते हुए।

ब्रह्मांडीय अनुबंध का जादू

अगर आप लगातार और डिसिप्लिन में इसकी प्रैक्टिस करेंगे, तो आप अपनी ज़िंदगी में एकदम जादू देखेंगे।

आपकी जीती हुई रकम दिन-ब-दिन बढ़ने लगेगी।

ब्रह्मांड सचमुच आपको पैसे देने के लिए मजबूर होगा, क्योंकि ब्रह्मांड सिर्फ कर्म के अटल नियम पर चलता है।

जैसा करोगे वैसा भरोगे। जब आप गुप्त दान देते हैं, तो आप ब्रह्मांड के लिए दरवाज़े खोल देते हैं ताकि वह आपको आठ गुना करके लौटाए।

आप जितना ज़्यादा रेगुलर ऐसा करेंगे, उतना ही ज़्यादा पैसा आपके पास आएगा। बहुत ही कम समय में, आप एक बड़ा बदलाव देखेंगे: आपके हारने का सिलसिला बहुत कम हो जाएगा, और आपकी जीत की रकम आसमान छू जाएगी।

क्रिकेट, ज्योतिष और ट्रेडिंग: सवाल-जवाब

Q1: क्या आप क्रिकेट बेटिंग सिखा रहे हैं?

जवाब: अगर किसी को शराब पीने की आदत है, तो उन्हें अक्सर सलाह दी जाती है कि अपने शरीर को कम से कम नुकसान कैसे पहुँचाएँ और होश में कैसे पिऐँ। इसी तरह, अगर कोई अपने पिछले कर्मों (12 Fix Karma Phal) के तय नतीजों की वजह से सट्टा लगाने लगता है, तो आपके कहने पर भी वे इसे नहीं छोड़ेंगे। ऐसे में आप क्या कर सकते हैं? ज्योतिष उन्हें बता सकता है कि वे अपने नुकसान को कैसे कम करें और होश में कैसे रहें। एक बार जब वे कर्म के उस तय समय से गुज़र जाते हैं और वह समय बीत जाता है, तो वे या तो खुद ही इसे छोड़ देंगे या इसे कंट्रोल में कर लेंगे।

Q2: क्या क्रिकेट की भविष्यवाणियां सही-सही बता सकती हैं कि कौन सी टीम जीतेगी?

जवाब: अगर यह 100% प्योर, बिना रुकावट वाला क्रिकेट होता, तो जवाब 'हाँ' होता। हालाँकि, क्योंकि यह 'स्क्रिप्टेड/मैनेज्ड' क्रिकेट है, इसलिए कुछ पाबंदियाँ हैं। फिर भी, कॉस्मिक तरंगें संकेत देती रहती हैं। अगर कोई कॉस्मिक एनर्जी को समझकर सही समय पढ़ सकता है, तो नतीजा 50% से 80% तक सही पता लगाया जा सकता है। यह काफी हद तक ज्योतिषी की टाइमिंग और जानकारी पर निर्भर करता है।

Q3: आपने 'Fixing' की जगह 'Setting' शब्द का इस्तेमाल किया है। क्या अंतर है?

जवाब: अंदर एक पूरी मैनेजमेंट टीम काम करती है। जब कोई गेम प्लान उनकी अंदरूनी जानकारी या खास इच्छाओं के आधार पर बनाया जाता है, तो उसे 'सेटिंग' कहते हैं। दूसरी तरफ, जब कोई बाहरी व्यक्ति गेम में दखल देने की कोशिश करता है (और कभी-कभी कामयाब भी हो जाता है), तो उसे 'फिक्सिंग' कहते हैं।

Q4: अगर अंदर से सब कुछ पहले से ही 'सेट' है, तो एस्ट्रोलॉजी क्या भूमिका निभाती है?

जवाब: एक ज्योतिषी यह बता सकता है कि 'सेटिंग' किस टीम के पक्ष में होगी। इसके अलावा, ज्योतिषी के लिए बेटिंग मार्केट की आम समझ होना ज़रूरी है। जैसे स्टॉक मार्केट में उतार-चढ़ाव होता है, वैसे ही क्रिकेट मैच में भी उतार-चढ़ाव आते हैं। अगर कोई उन उतार-चढ़ावों में 'ट्रेड' करना सीख जाता है, तो वह पैसे कमा सकता है, भले ही असल में कोई भी टीम जीते। कमाई सिर्फ किसी खास टीम के जीतने पर निर्भर नहीं करती। अगर किसी सट्टेबाज के दिमाग को शुरू से ही ट्रेड करने के लिए ट्रेन किया जाए, तो वह लगातार मुनाफ़ा कमा सकता है। मकसद एक ट्रेडर बनना है, जुआरी नहीं।

Q5: अगर हर कोई ट्रेडर बन जाए, तो बेटिंग कंपनियों का क्या होगा?

जवाब: सबसे पहले, हर पंटर ट्रेडर नहीं बनेगा; एवरेज का नियम हर जगह लागू होता है। हालाँकि, अगर 0.01% लोग भी एस्ट्रोलॉजी और स्प्रिचुअलिटी का इस्तेमाल करके इस एनर्जी को चैनल करना सीख लें, तो मुझे खुशी होगी। अवेयरनेस के साथ किया गया कोई भी काम बेहतर रिजल्ट देता है, और वही अवेयरनेस यहीं अप्लाई की जा सकती है।

Q6: क्या आप क्रिकेट बेटिंग को लीगल करने का समर्थन करते हैं?

जवाब: मेरी पर्सनल राय मायने नहीं रखती। 2018 में, सुप्रीम कोर्ट के जस्टिस श्री बीएस चौहान ने सिफारिश की थी कि बेटिंग पर बैन लगाना लगभग नामुमकिन है, इसलिए इसे रेगुलेट किया जाना चाहिए। कई राज्यों में शराब और ठिहस्की बैन हैं, लेकिन असलियत सब जानते हैं। इस पर बैन लगाने से देश को सिर्फ रेवेन्यू का नुकसान होता है।

प्रश्न 7: आप अपनी किताब के माध्यम से क्या संदेश देना चाहते हैं?

जवाब: मैं चाहता हूँ कि क्रिकेट एस्ट्रोलॉजी रिसर्च के फील्ड में और एस्ट्रोलॉजर आगे आएँ। अगर वे उन देशों में क्लाइंट्स तक पहुँचते हैं जहाँ बेटिंग लीगल है—जैसे, UAE 2027 में स्पोर्ट्स बेटिंग को रेगुलेट कर रहा है—तो वे बेटर्स को अवेयरनेस के साथ बेटिंग करना सिखा सकते हैं, जिससे नुकसान कम होगा। इस तरह, बेटर्स की एक कम्युनिटी बनाई जा सकती है जो 'TIME' को समझते हैं और ट्रेड करना जानते हैं। इससे उन देशों में इनकम का एक एक्स्ट्रा सोर्स बन सकता है। नतीजतन, देश को बेटर्स और एस्ट्रोलॉजर के रूप में टैक्सपेयर्स का एक बड़ा ग्रुप मिल सकता है, जो अब तक लगभग ज़ीरो था।

प्रश्न 8: क्या आपको लगता है कि आप अपने मिशन में सफल होंगे?

जवाब: मैं अपनी कई सालों की क्रिकेट एस्ट्रोलॉजी रिसर्च को एक किताब और ऑनलाइन एजुकेशन के रूप में पेश करना चाहता हूँ। मेरे पास मुझे गाइड करने वाला कोई नहीं था, इसलिए मुझे इन फाइंडिंग्स को खोजने में बहुत समय लगा। हालाँकि, अगर कोई इस फील्ड में रिसर्च करना चाहता है और आगे बढ़ना चाहता है, तो उन्हें इस मटीरियल से बहुत सपोर्ट मिलेगा और वे बहुत कम समय में आगे बढ़ सकते हैं।

Q9: किसी को आपकी किताब क्यों खरीदनी चाहिए?

उत्तर:

क्रिकेट लवर्स: उन्हें 'इनसाइड क्रिकेट' के बारे में पढ़ने को मिलेगा। हालाँकि इस टॉपिक पर एपिसोड और फिल्में बन चुकी हैं, लेकिन इससे उन्हें सीधे एक बुकी के नजरिए से इसके बारे में जानने का मौका मिलता है।

ज्योतिष के छात्र: जो लोग क्रिकेट पर रिसर्च करना चाहते हैं, उन्हें आगे बढ़ने का एक साफ़ रास्ता मिलेगा।

पेंटर्स: अगर उन्हें अपने नुकसान को कम करने की जानकारी मिल जाए, तो एक दिन ऐसा आ सकता है जब वे उन नुकसानों को रेगुलर मुनाफे में बदल सकें।

सबसे महत्वपूर्ण मार्गदर्शन में से एक

पेंटर को बनना होगा (अर्जुन)

सबसे पहले, आपको अर्जुन बनना होगा, और अर्जुन बनना एक दिन का काम नहीं है। कृष्ण अर्जुन के साथ थे, और उन्हें उसे बहुत कुछ समझाना पड़ा; आपको अपने कृष्ण को ढूंढना होगा। इस कलियुग में, इस भौतिकवादी युग में, आपको एक गुरु ढूंढना होगा।

अगर आपको लगता है कि आपमें टैलेंट है, आपको लगता है कि आप ट्रेडिंग के लिए बने हैं, आपको लगता है कि दुनिया भर में जो ₹15,000 करोड़ जाते हैं, लगभग ₹1 लाख करोड़, अगर आपको लगता है कि उस पैसे में से कुछ आप पर कृपा से बरसेगा, तो आपको उस कृपा को लेना सीखना होगा।

आपको समर्पण और सरेंडर करना सीखना होगा। अर्जुन की तरह, जिसने पूरी तरह सरेंडर कर दिया और अपने दिमाग का इस्तेमाल नहीं किया, आपको अब तक बेटिंग लाइन के बारे में जो कुछ भी सीखा है, उसे एक तरफ रखना होगा। आपको अर्जुन की तरह इस रास्ते पर चलना होगा। अगर आप सीखने के लिए तैयार हैं, तो ऐसा नहीं है कि सीखने की कोई उम्र होती है, और ऐसा भी नहीं है कि कोई इंसान एक किताब या एक लाइन में सब कुछ सीख जाता है। अगर आप समर्पण में आ जाते हैं और इस सोच में आ जाते हैं कि "हाँ, मुझे अर्जुन बनना है, बताओ क्या करना है," तो आपको खुद ही एक गुरु मिल जाएगा, आपको खुद ही अपना कृष्ण मिल जाएगा।

अस्वीकरण

यह किताब किसी भी तरह से जुए को बढ़ावा नहीं देती है। यह कोई बायोग्राफी या जीवन की कहानी नहीं है, बल्कि लेखक के साथ हुई निजी घटनाओं का कलेक्शन है, जिसे कहानी के रूप में पेश किया गया है।

इन चैप्टर में बताए गए फ़ॉर्मूले और सिद्धांत सिर्फ़ कुछ लोगों के पर्सनल अनुभव पर आधारित हैं। इस बात की कोई गारंटी नहीं है कि इन तरीकों को अपनाने से सभी को फ़ायदा होगा।

यह किताब सिर्फ मनोरंजन और जानकारी के मकसद से लिखी गई है। इसमें बताए गए कॉन्सेप्ट को इस्तेमाल करने से आपको फ़ायदा हो या नुकसान, इसके लिए सिर्फ आप ही पूरी तरह ज़िम्मेदार होंगे। किसी भी व्यक्ति के काम या नतीजों के लिए लेखक की कोई फ़ाइनेंशियल या दूसरी ज़िम्मेदारी नहीं है।